कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

● भोपाल मंगलवार 03 से 09 जून 2025 ● वर्ष-26 ● अंक-02 ● पृष्ठ-16 ● मूल्य-13 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

धान, कपास समेत 14 फसलों का एमएसपी बढ़ा

नई दिल्ली। सरकार ने किसानों को सौगात देते हुए खरीफ एमएसपी में 50 फीसदी की बढ़ोत्तरी की है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा पिछले 10-11 वर्षों में खरीफ फसलों के लिए एमएसपी में भारी बढ़ोतरी की गई है। खरीफ विपणन सीजन 2025-26 के लिए एमएसपी को कैबिनेट द्वारा मंजूरी दी गई है। खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में 820 रुपये तक की वृद्धि की है। सबसे अधिक एमएसपी रामतिल का बढ़ाया गया है। खरीफ सीजन की प्रमुख खाद्यान्न फसल धान के एमएसपी में सबसे कम 69 रुपये की वृद्धि की गई है। इस सीजन की सबसे बड़ी तिलहन फसल सोयाबीन का एमएसपी 436 रुपये क्विंटल बढ़ाया गया है। कपास के एमएसपी में 589 रुपये क्विंटल की वृद्धि की गई है।

धान (सामान्य)का एमएसपी 69 रुपये बढ़ाकर 2369 रुपये, धान ए ग्रेड का एमएसपी भी इतना बढ़ाकर 2,389 रुपये क्विंटल कर दिया है। हाइब्रिड ज्वार का एमएसपी 328 रुपये बढ़ाकर 3,699 रुपये, बाजरा का एमएसपी 150 रुपये बढ़ाकर 2,775 रुपये, रागी का एमएसपी 596 रुपये बढ़ाकर 4,886 रुपये और मक्का का एमएसपी 175 रुपये बढ़ाकर 2,400 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया है।

सरकार ने खरीफ सीजन की दलहन फसलों के एमएसपी में 450 रुपये क्विंटल तक की बढ़ोतरी की है। अरहर का एमएसपी 450 रुपये बढ़ाकर 8,000 रुपये, मूंग का एमएसपी 86 फीसदी बढ़ाकर 8,768 रुपये और उड़द का एमएसपी 400 रुपये बढ़ाकर 7,800 रुपये क्विंटल कर दिया है।

खरीफ फसलों का समर्थन मूल्य घोषित

फसल	एमएसपी 2024-25	एमएसपी 2025-26	एमएसपी वृद्धि
धान (सामान्य)	2,300	2,369	69
धान (ए ग्रेड)	2,320	2,389	69
ज्वार (हाईब्रिड)	3,371	3,699	328
ज्वार (मालदांडी)	3,421	3,749	328
बाजरा	2,625	2,775	150
रागी	4,290	4,886	596
मक्का	2,225	2,400	175
तुअर/अरहर	7,550	8,000	450
मूंग	8,682	8,768	86
उड़द	7,400	7,800	400
मूंगफली	6,783	7,263	480
सूरजमुखी	7,280	7,721	441
सोयाबीन	4,892	5,328	436
तिल	9,267	9,846	579
रामतिल	8,717	9,537	820
कपास (मिडिल स्टेपल)	7,121	7,710	589
कपास (लॉन्ग)	7,521	8,110	589

(नोट- दरें रुपये प्रति क्विंटल में)

केंद्र सरकार ने खरीफ सीजन की तिलहन फसलों में रामतिल का एमएसपी सबसे अधिक 820 रुपये बढ़ाकर 9,537 रुपये क्विंटल कर दिया है। मूंगफली का एमएसपी 480 रुपये बढ़ाकर 7,263 रुपये, सूरजमुखी का 441 रुपये बढ़ाकर 7,721 रुपये, सोयाबीन का 436 रुपये बढ़ाकर 5,328 रुपये, तिल का 579 रुपये बढ़ाकर 9,846 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया गया है।

कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी बयान में कहा गया है कि विपणन सीजन 2025-26 हेतु खरीफ फसलों के लिए एमएसपी में वृद्धि केंद्रीय बजट 2018-19 की घोषणा के अनुरूप है। (शेष पृष्ठ 2 पर)

कृषि समागम में किसान नई तकनीक से हुए रूबरू

प्रगतिशील किसानों को किया सम्मानित

नरसिंहपुर। पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल के मुख्य आतिथ्य में नरसिंहपुर में तीन दिवसीय कृषि उद्योग समागम का समापन कार्यक्रम कृषि उपज मंडी के समीप हुआ। श्री पटेल ने कहा कि इस मेले का उद्देश्य किसानों व उद्यमियों को परंपरागत खेती की बजाय जैविक और उन्नत खेती के प्रति जागरूक करना और आधुनिक उपकरणों, कृषि वैज्ञानिकों के माध्यम से खेती में मार्गदर्शन और तकनीकी परामर्श देना था। अब समय आ गया है कि किसान एक-दूसरे से विचार-विमर्श और मंथन कर खेती की इन तकनीक को समझें, जिससे भू-जल स्तर बना रहे।

कलेक्टर श्रीमती पटले ने तीन दिवसीय कृषि उद्योग समागम मेले के बारे में बताया। समापन कार्यक्रम में किसानों ने भी अपने विचार साझा किये है।

उन्होंने कहा कि उन्नत खेती की ओर बढ़ने का मुख्यमंत्री का यह निर्णय सराहनीय है। किसानों के कृषि संबंधी नवीन कृषि उपकरणों को एक ही कार्यक्रम में समाहित किया गया है। कृषि आधारित प्रदर्शनी का लाभ किसानों को मिला है। किसानों ने प्रदर्शनी को सराहा। श्री पटेल ने प्रगतिशील किसानों का सम्मान किया। उन्होंने उद्यानिकी के क्षेत्र में कृषक शिवम दीक्षित, जैविक खेती व जैविक खाद्य के क्षेत्र में कृषक गजेन्द्र सिंह, महिला कृषक अर्चना राजे स्वामी, नरवाई प्रबंधन में कृषक शेरसिंह राजपूत, स्टॉल प्रदर्शनी में आम की किस्मों के लिए विजय पाल सिंह, गोविंद सिंह पटेल और गुड़ के विभिन्न उत्पाद के लिए करण सिंह को सम्मानित किया।

दुग्ध उत्पादन में मप्र का योगदान 20 फीसदी पहुंचाने का लक्ष्य

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश गौसेवा के संकल्प के साथ दुग्ध से समृद्धि के पथ पर अग्रसर है। अंबेडकर कामधेनु योजना के अंतर्गत गोपालन करने वाले आर्थिक रूप से सशक्त होंगे और देश के दुग्ध उत्पादन में मध्यप्रदेश का योगदान 9 से बढ़ाकर हम 20 प्रतिशत तक पहुंचाने का लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेंगे।

डॉ. यादव ने कहा कि नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड के साथ मध्यप्रदेश सरकार ने अनुबंध किया है, जिससे प्रदेश के ग्रामों में दुग्ध सहकारी समितियां गठित कर दुग्ध उत्पादन में वृद्धि की जाएगी। सांची ब्रांड को लोकप्रिय बनाया जा रहा है। गौशालाओं और गौ-पालकों को पूरा प्रोत्साहन दिया जा रहा है। प्रदेश में गाय के दूध से निर्मित उत्पाद और औषधियां अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का प्रयास है। मध्यप्रदेश देश की डेयरी केपिटल बनेगा।

केले की फसल के नुकसान का आकलन करने के निर्देश

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बुरहानपुर जिले के विभिन्न गांवों में आंधी-तूफान और तेज बारिश के कारण केले की फसल की क्षति को लेकर किसान बंधु चिंतित न हों, राज्य सरकार किसानों के साथ है। इस संबंध में संज्ञान लेते हुए जिला प्रशासन को तुरंत प्रभावित गांवों में केले की फसल का सर्वे कर नुकसान का आकलन करने के निर्देश दे दिए गए हैं। मध्यप्रदेश में केला उत्पादन की दृष्टि से बुरहानपुर महत्वपूर्ण जिला है। सर्वे रिपोर्ट के आधार पर किसान बंधुओं को क्षति पूर्ति स्वरूप सहायता राशि दी जाएगी।

खरीफ 2025 की संभागीय बैठकें 20 जून तक

भोपाल। रबी 2024-25 की समीक्षा एवं खरीफ 2025 के कार्यक्रम निर्धारण लिये प्रदेश में संभागीय समीक्षा बैठकें कृषि उत्पादन आयुक्त अशोक बर्णवाल की अध्यक्षता में 20 जून तक होगी। जानकारी के अनुसार विगत 28 मई को भोपाल-नर्मदापुरम संभाग की बैठक आयोजित की गई। इसी प्रकार 4 जून को इंदौर, 5 जून उज्जैन, 11 जून जबलपुर, 12 जून सागर, 18 जून रीवा-शहडोल एवं 20 जून को ग्वालियर-चंबल संभाग की बैठकें होंगी। उक्त बैठकों में कृषि उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन , सहकारिता तथा संबंध विभागों के संभाग व जिलों के अधिकारी भाग लेंगे।

6.1 करोड़ किसानों को मिली डिजिटल पहचान

म.प्र., उ.प्र. और महाराष्ट्र में सबसे अधिक किसान पहचान पत्र जारी

नई दिल्ली। किसानों को डिजिटल पहचान देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने 14 राज्यों के 6.1 करोड़ से अधिक किसानों को डिजिटल आईडी प्रदान की है। इस डिजिटल आईडी को किसान पहचान पत्र भी कहा जाता है। इस आईडी में किसानों से जुड़ी कई जानकारी जैसी भूमि स्वामित्व, खेत में उगाई गई फसलें शामिल होती हैं। इन जानकरियों को डिजिटल लेखा-जोखा होने के कारण योजनाओं का आवेदन करने वाले किसान की पहचान सत्यापित करना आसान हो जाता है। वहीं, सुनिश्चित होता है कि केवल पात्र किसान को ही योजनाओं का लाभ मिले।

किसान पहचान पत्र सरकार के साथ किसानों की सरकारी योजनाओं तक पहुंच को आसान बनाने का काम करता है। उदाहरण के लिए किसान बार-बार सत्यापन के बिना पीएम-किसान सम्मान निधि योजना, फसल बीमा कार्यक्रम और किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) जैसी योजनाओं का लाभ आसानी से उठा सकते हैं, बीज, उर्वरक जैसी सब्सिडी का किसानों के खाते तक हस्तांतरण की प्रक्रिया तेज होती है, कागजी कार्रवाई में किसानों को कम समय निवेश करना होता है। कृषि मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2027 के आखिर तक 11 करोड़ किसानों को किसान पहचान पत्र के माध्यम से डिजिटल पहचान देने का लक्ष्य रखा है।

देश के 14 राज्यों में किसान पहचान पत्र बनाने का कार्यक्रम शुरू है। इन 14 राज्यों में सबसे अधिक 1.3 करोड़ किसान आईडी उत्तर प्रदेश में बनी है। वहीं, 99 लाख आईडी के साथ महाराष्ट्र दूसरे पायदान पर है। इसी तरह मध्य प्रदेश में 83 लाख, आंध्र प्रदेश में 45 लाख, गुजरात में 44 लाख, राजस्थान में 75 लाख और तमिलनाडु में 30 लाख आईडी बनाई गई हैं।

असम, बिहार, छत्तीसगढ़, ओडिशा, केरल, तेलंगाना और मध्य प्रदेश ने किसान पहचान पत्र बनाने में प्रगति दिखाई है। किसान तक सरकारी सेवाओं और योजनाओं का लाभ पहुंचने की व्यवस्था को संगठित करने के लिए किसान पहचान पत्र सरकार की एग्रीस्टैक पहल का एक हिस्सा है। आधार कार्ड की तर्ज पर बने किसान पहचान पत्र अगले कुछ वर्षों में तैयार किए जाएंगे।

(प्रथम पृष्ठ का शेष) धान, कपास समेत 14.....

जिसमें एमएसपी को अखिल भारतीय भारित औसत उत्पादन लागत के कम से कम 1.5 गुना के स्तर पर तय करने की बात कही गई है। किसानों को उनकी उत्पादन लागत पर अपेक्षित मार्जिन बाजरा (63 प्रतिशत) के मामले में सबसे अधिक होने का अनुमान है। इसके बाद मक्का (59 प्रतिशत), तुअर (59 प्रतिशत) और उड़द (53 प्रतिशत) का स्थान है। शेष फसलों के लिए किसानों को उनकी उत्पादन लागत पर मार्जिन 50 प्रतिशत होने का अनुमान है।

केंद्र सरकार ने संशोधित ब्याज सहायता योजना (एमआईएसएस) को 2025-26 के लिए जारी रखने को मंजूरी दे दी, जिसके तहत किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) के माध्यम से सस्ती दर पर अल्पकालिक ऋण मिलता है। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि मौजूदा 1.5 प्रतिशत ब्याज सहायता के साथ वित्त वर्ष 2025-26 के लिए एमआईएसएस को जारी रखने का निर्णय केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा लिया गया। इस योजना को जारी रखने से सरकारी खजाने पर 15,640 करोड़ रुपये का बोझ पड़ेगा।

विकसित कृषि संकल्प अभियान से सवा तीन लाख किसान जुड़े

केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने दिया उत्पादन बढ़ाने का मंत्र

नई दिल्ली। देशभर में 15 दिनों तक विकसित कृषि संकल्प अभियान चलाया जा रहा है। अभियान में केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किसानों से संवाद करते हुए कहा कि बिना विकसित कृषि के विकसित भारत की कल्पना नहीं की जा सकती। इसी उद्देश्य से 16 हजार कृषि वैज्ञानिकों को अपने शोध और अनुभव किसानों के बीच लाने के साथ किसानों की समस्या के आधार पर नए शोध करने के निर्देश दिए हैं।

श्री चौहान ने कहा कि अगर मंत्री, सांसद, वैज्ञानिक, कृषि विभाग पूरे देश में एक टीम के साथ काम करें तो देश का उत्पादन भी बढ़ेगा और किसानों की आय भी बढेगी। इसके साथ हम विश्व को भोजन देने में सक्षम हो सकेंगे। उन्होंने कृषि वैज्ञानिक सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि विश्वविद्यालय, मोदीपुरम मेरठ, कृषि वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मेरठ को कृषक वैज्ञानिक संवाद के माध्यम से किसानों का ज्ञानवर्धन करने का निर्देश दिया।

इस कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्यप्रताप शाही, कृषि राज्यमंत्री बलदेव सिंह औलख, महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद डॉ. मांगीलाल जाट आदि मौजूद रहे।

वाराणसी के ग्राम बरीयासनापुर (ब्लॉक चिरईगांव) में डॉ. रमेश मौर्य, अपर कृषि निदेशक (भूमि संरक्षण) और वैज्ञानिकों ने पीएम किसान योजना, फार्मर रजिस्ट्री और नवीन कृषि तकनीकों पर चर्चा की। लखनऊ के ग्राम करनपुर (ब्लॉक मोहनलालगंज) में संयुक्त कृषि निदेशक एके सिंह ने धान की सीधी बुवाई, फसल बीमा, गन्ना अनुसंधान, उपोष्ण वागवानी आदि विषयों पर चर्चा की। कृषि विज्ञान केंद्र और कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी कार्यक्रम में शामिल रहे।

सामान्य से अधिक बारिश की संभावना

नई दिल्ली। मौसम विज्ञान विभाग ने 2025 के लिए मॉनसून का अपना अनुमान संशोधित करते हुए कहा कि देश में लंबी अवधि के औसत का 106 फीसदी बारिश होने का अनुमान है जबकि अप्रैल में 105 फीसदी बारिश का अनुमान लगाया गया था। इसके साथ ही मौसम विभाग ने कहा कि जून में सामान्य से अधिक वर्षा होने की संभावना है, जो दीर्घकालिक औसत की 108 फीसदी होगी। जून से सितंबर तक की बारिश के अनुमान में 4 फीसदी की घट-बढ़ संभव है।

इतना ही नहीं मौसम विभाग ने कहा कि इस साल पूर्वोत्तर और बिहार के कुछ हिस्सों को छोड़कर देश के लगभग सभी क्षेत्रों में मॉनसूनी बारिश सामान्य से अधिक रहेगी। मौसम विभाग के क्षेत्रीय पूर्वानुमान के अनुसार इस साल केवल अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय में ही 'सामान्य से कम' बारिश का अनुमान है। देश के कुछ सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्रों यानी कोर जोन में मॉनसूनी बारिश 'सामान्य से अधिक' रहने की उम्मीद है तथा अच्छी बारिश की संभावना 56 फीसदी है। देश के पश्चिमी और मध्यवर्ती इलाकों के मुख्य वर्षा आधारित क्षेत्रों में अच्छी बारिश से दलहन और तिलहन की पैदावार को फायदा मिल सकता है और दालों के महंगे आयात पर निर्भरता कम हो सकती है। कुल मिलाकर दक्षिण-पश्चिम मानसून अच्छा रहने और वर्षा का वितरण बेहतर रहने के अनुमान से खरीफ फसलों का उत्पादन बढ़ सकता है और रबी फसल के लिए मिट्टी में पर्याप्त मात्रा में नमी भी रहेगी।

अग्रिम अनुमान के मुताबिक वित्त वर्ष 2025 में देश के कुल सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का योगदान करीब 16.35 फीसदी रह सकता है। अच्छी फसल से सरकार को खाद्य मुद्रा स्फीति नियंत्रित करने में मदद मिलेगी और भारतीय रिजर्व बैंक को वित्त वर्ष 2026 में बेंचमार्क ब्याज दरों को कम करने के लिए अधिक गुंजाइश मिलेगी। इससे सरकार कृषि निर्यात में अधिक उदारता बरत सकती है।

रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2026 में जीडीपी वृद्धि 6.5 फीसदी रहने और खुदरा मुद्रा स्फीति के 4 फीसदी रहने का अनुमान लगाया है। भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने कहा कि भूमध्यरेखीय प्रशांत क्षेत्र में तटस्थ अल नीनो साउथ ऑसिलेशन स्थितियां हैं और नवीनतम मानसून मिशन जलवायु पूर्वानुमान प्रणाली के साथ-साथ अन्य मॉडल पूर्वानुमान से संकेत मिलता है कि मॉनसून के दौरान तटस्थ अल नीनो साउथ ऑसिलेशन स्थिति बनी रहने की संभावना है। मॉनसून को प्रभावित करने वाले हिंद महासागर डायपोल के भी नकारात्मक रहने की उम्मीद है। श्री महापात्र ने कहा कि मौसम विभाग को पूरा भरोसा है कि देश के लगभग सभी हिस्सों के लिए उसका 'सामान्य से अधिक' मानसून का अनुमान सही साबित होगा क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में पूर्वानुमान मॉडल में बदलाव के कारण मौसम विभाग की सटीकता कई गुना बढ़ गई है।

खाद्यान्न उत्पादन में रिकार्ड बढ़ोतरी

2024-25 के तृतीय अग्रिम अनुमान जारी

नई दिल्ली। कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वर्ष 2024-25 के लिए तृतीय अग्रिम अनुमान जारी करते हुए कहा कि देश में रिकॉर्ड 3539.59 लाख टन खाद्यान्न उत्पादन हुआ है। धान, गेहूं, मक्का, मूंगफली, सोयाबीन सहित कई फसलों में ऐतिहासिक वृद्धि दर्ज की गई है, जो किसानों की मेहनत का परिणाम है।

श्री चौहान ने कहा कि धान, गेहूं, मक्का, मूंगफली, सोयाबीन में उत्पादन ने सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। हमारे किसान भाइयों-बहनों की अथक मेहनत, कृषि वैज्ञानिकों की कुशलता और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की किसान हितैषी नीतियों-योजनाओं के सफल कार्यान्वयन व राज्य सरकारों के सहयोग से देश में खाद्यान्न के भंडार भर गए हैं। केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने मीडिया से चर्चा करते हुये कहा कि प्रसन्नता की बात है कि 2024-25 के तृतीय अग्रिम अनुमान के अनुसार देश ने अनुमानित 3539.59 लाख मीट्रिक टन खाद्यान्न का रिकॉर्ड उत्पादन हासिल किया है, जो 2023-24 के 3322.98 लाख मीट्रिक टन खाद्यान्न उत्पादन से 216.61 लाख मीट्रिक टन अधिक (6.5 प्रतिशत की वृद्धि) है। श्री चौहान ने बताया कि वर्ष 2024-25 में धान, गेहूं, मक्का, मूंगफली, सोयाबीन जैसी प्रमुख फसलों का रिकॉर्ड उत्पादन प्राप्त हुआ है। खरीफ मौसम में बुवाई क्षेत्रफल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, साथ ही धान, मक्का, बाजरा, मूंग, सोयाबीन, गन्ना जैसी प्रमुख खरीफ फसलों की उपज में भी वृद्धि दर्ज की गई है। श्री चौहान ने विभिन्न फसलों के उत्पादन का विवरण देते हुए बताया कि चावल उत्पादन 1490.74 लाख मीट्रिक टन (रिकॉर्ड), गेहूं 1175.07 लाख मीट्रिक टन (रिकार्ड), मक्का 422.81 लाख मीट्रिक टन (रिकार्ड), श्रीअन्न 180.15 लाख मीट्रिक टन, तूर 35.61 लाख मीट्रिक टन, चना 113.37 लाख मीट्रिक टन उत्पादन हुआ है। तिलहन में 426.09 लाख मीट्रिक टन उत्पादन हुआ है, जिसमें मूंगफली 118.96 लाख मीट्रिक टन (रिकार्ड), सोयाबीन 151.80 लाख मीट्रिक टन (रिकार्ड), रेपसीड-सरसों में 126.06 लाख मीट्रिक टन उत्पादन हुआ है।

श्री चौहान ने बताया कि गन्ना 4501.16 लाख मीट्रिक टन, कपास 306.92 लाख गांठें (प्रत्येक गांठ 170 किलोग्राम), जूट 84.33 लाख गांठें (प्रत्येक गांठ 180 किलोग्राम) है। चावल उत्पादन 1490.74 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है, जो 2023-24 के 1378.25 लाख मीट्रिक टन उत्पादन की तुलना में112.49 लाख मीट्रिक टन अधिक है। गेहूं उत्पादन 1175.07 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है, जो गत वर्ष के उत्पादन की तुलना में 42.15 लाख मीट्रिक टन अधिक है। श्रीअन्न उत्पादन 180.15 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है, जो गत वर्ष से 4.43 लाख मीट्रिक टन अधिक है। इसके अलावा, पोषक/मोटे अनाजों का उत्पादन 621.40 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है, जो 2023-24 के उत्पादन से 52.04 लाख मीट्रिक टन अधिक है। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने बताया कि दलहन उत्पादन 252.38 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है, जो गत वर्ष के 242.46 लाख मीट्रिक टन उत्पादन की तुलना में 9.92 लाख मीट्रिक टन ज्यादा है। मूंग उत्पादन 38.19 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है, जो पिछले वर्ष के 31.03 लाख मीट्रिक टन उत्पादन से 7.16 लाख मीट्रिक टन अधिक है। तुअर उत्पादन 35.61 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है, जो पिछले वर्ष के 34.17 लाख मीट्रिक टन उत्पादन से 1.44 लाख मीट्रिक टन अधिक है। तिलहनों का कुल उत्पादन 426.09 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है, जो गत वर्ष के 396.69 लाख मीट्रिक टन उत्पादन की तुलना में 29.40 लाख मीट्रिक टन अधिक है। सोयाबीन उत्पादन 151.80 लाख मीट्रिक टन एवं मूंगफली का उत्पादन 118.96 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है, जो पिछले वर्ष के उत्पादन की तुलना में क्रमशः 21.18 लाख मीट्रिक टन एवं 17.16 लाख मीट्रिक टन अधिक है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

साप्ताहिक सुविचार

जहां शांति नहीं वहां असीमित दुख और तकलीफें हैं।

– स्वामी दयानंद

खरीफ फसलों की एमएसपी

सरकार ने चालू फसल विपणन वर्ष 2025 के लिये खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को स्वीकृति प्रदान कर दी है। केन्द्रीय कैबिनेट आर्थिक मामलों की समिति ने उक्ताशय का निर्णय लेते हुये खरीफ फसलों का एमएसपी घोषित कर दिया है। हर वर्ष की तरह सरकार ने तिलहनी एवं दलहनी फसलों को महत्व देते हुये इस वर्ष भी इनके समर्थन मूल्यों में सर्वाधिक इजाफा किया है। सबसे अधिक रामतिल का समर्थन मल्य 820 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ाया गया है। तिल के एमएसपी में 579 रुपये क्विंटल की वृद्धि की गई है। इसी तरह दलहनी फसलों में 450 रुपये क्विंटल की वृद्धि अरहर में एवं उड़द का दाम 400 रुपये क्विंटल बढ़ाया गया है। श्री अन्न को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रागी एवं ज्वार के एमएसपी में क्रमशः 596 एवं 328 रुपये क्विंटल की वृद्धि की गई है। सरकार द्वारा दावा किया गया है कि किसानों की उत्पादन लागत का 50 प्रतिशत अधिक एमएसपी सभी फसलों का बढ़ाया गया है। बढ़ी हुई एमएसपी देखकर सरकार का यह दावा पूरी तरह खोखला प्रतीत होता है। सरकार ने उन फसलों का एमएसपी सबसे अधिक बढ़ाया है जिसकी खेती किसानों द्वारा नाममात्र की की जाती है। रामतिल जैसी फसल कुल बोये गये खरीफ का 5 प्रतिशत भी नहीं लगायी जाती है। इसी तरह तिल की खेती भी किसानों द्वारा सीमित क्षेत्र में की जाती है। दलहनी फसलों की एमएसपी पिछले पांच वर्षों के दौरान लगातार बढ़ायी जा रही है लेकिन दलहनी फसलों का क्षेत्र एवं उत्पादन जस का तस बना हुआ है। खरीफ की सबसे प्रमुख फसल धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य सबसे कम मात्र 69 रुपये क्विंटल बढ़ाया गया है। जबकि वास्तविकता यह है कि धान का एमएसपी अधिक बढ़ाया जाना चाहिये था। वर्तमान में धान की उत्पादन लागत को देखते हुये 69 रुपये क्विंटल की वृद्धि 'ऊंट के मुंह में जीरा' समान है। पिछले पांच वर्षों के दौरान धान की उत्पादन लागत दोगुना से भी अधिक हो गई है। बीज, खाद, कीटनाशक, खरपतवारनाशी इत्यादि के दाम सबसे अधिक बढ़े हैं। मजदूरों की कमी से कृषि यंत्रीकरण पर निर्भरता ने धान की उत्पादन लागत को और बढ़ा दिया है। सरकार द्वारा दी जाने वाली एमएसपी किसानों के लिये बहुत मायने रखती है। धान, मक्का एवं मूंग की एमएसपी वृद्धि पर सरकार को अवश्य विचार करना चाहिये।

लैब-टू-लैंड के मंत्र को साकार करेगा विकसित कृषि संकल्प अभियान

विकसित कृषि संकल्प अभियान, विकसित भारत का आधार

● शिवराज सिंह चौहान

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में भारतीय कृषि निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। उनकी दूरदर्शी सोच और किसान कल्याण को समर्पित ऐतिहासिक निर्णयों ने हमारे किसान भाइयों-बहनों को समृद्ध व सशक्त बनाया है, साथ ही 'विकसित भारत' के विराट संकल्प को नई मजबूती दी है।

आज हमारे अन्नदाता न केवल देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर रहे हैं, बल्कि विश्व के कई देशों में खाद्यान्न निर्यात करके भारत का गौरव बढ़ा रहे हैं। कृषि विकसित और किसान आत्मनिर्भर बनें, लैब में होने वाले शोध सही समय में खेतों तक पहुंचे, इसी लक्ष्य को लेकर हम राज्यों के साथ मिलकर 'एक राष्ट्र-एक कृषि-एक टीम' के रूप में कार्य कर रहे हैं।

देश की समृद्धि का आधार कृषि और किसान हैं। हमारे कृषि वैज्ञानिकों ने अनेक शोध किए है। कृषि वैज्ञानिक नई तकनीक, उन्नत बीज, खाद इत्यादि से कम लागत पर फसल उत्पादन बढ़ाने के काम में जुटे हुए हैं। हमारे वैज्ञानिकों के शोध किसानों तक सही समय पर पहुंचे, उन्हें जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, मिट्टी के पोषक तत्वों, उर्वरकों की सही मात्रा सहित कृषि के विभिन्न आयामों से अवगत कराया जा सके, इसके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा 29 मई से 12 जून तक 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' प्रारंभ किया जा रहा है। इस राष्ट्रव्यापी अभियान के माध्यम से देश के 700 से अधिक जिलों के लगभग 65 हजार गांवों में वैज्ञानिकों की 2170 टीमें पहुंचेगी। इस दौरान लगभग 1.5 करोड़ किसानों से सीधा संवाद किया जाएगा।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में कृषि को विकसित बनाना और किसानों का जीवन बदलना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' कोई कर्मकांड नहीं, बल्कि किसानों के जीवन में समृद्धि लाने का महायज्ञ है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, राज्यों के कृषि विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, नवाचार से जुड़े संस्थान सभी एकजुट होकर, एक टीम के रूप में 'विकसित कृषि और समृद्ध किसान' के लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे। यह अभियान प्रधानमंत्री जी के 'लैब टू लैंड' के मंत्र को साकार कर किसानों की तकदीर और भारतीय कृषि की तस्वीर बदलेगा। वैज्ञानिक गांवों में जाकर किसानों से सीधा संवाद करेंगे और लैब में होने वाली रिसर्च की जानकारी किसानों को देंगे। साथ ही, किसानों के अनुभवों से भी सीखकर कृषि अनुसंधान को व्यवहारिक बनाएंगे। हमारे विकसित कृषि संकल्प अभियान के प्रयासों और किसानों के अथक परिश्रम से, एक हेक्टेयर में एक क्विंटल भी उत्पादन बढ़ता है तो देशभर में 20 टन खाद्यान उत्पादन बढ़ाने में हम यह सफल होंगे।

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसी पर निर्भर है। यह क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में लगभग 18 प्रतिशत का योगदान करता है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत तेजी से विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है, जिसमें विकसित खेती और समृद्ध किसान का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बीते 11 वर्षों में किसानों को सशक्त करने के लिए सरकार ने बीज से बाजार तक हर वो फैसला लिया है, जो किसानों के लिए खेती को और आसान बनाए। हाल ही में लिए गए निर्णय जैसे न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी हो या प्याज और चावल से निर्यात शुल्क को हटाना, फसलों की जलवायु अनुकूल और अधिक उपज वाली किस्मों के विकास से लेकर किसान हितैषी योजनाओं के विस्तार तक मोदी सरकार की प्राथमिकता में सदैव किसान कल्याण रहा है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने हाल ही में जापान को पीछे छोड़कर विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में छलांग लगाई है। कृषि उत्पादन को देखें तो इसमें ऐतिहासिक वृद्धि हुई है। वर्ष 2024-25 में खाद्यान्न उत्पादन के 3309 लाख टन तक पहुंचने की संभावना है। खरीफ चावल 1206 लाख टन, गेहूं 1154 लाख टन और सोयाबीन 151 लाख टन के साथ रिकॉर्ड स्तर पर है। सोयाबीन की उत्पादकता 985 किलो प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 1169 किलो प्रति हेक्टेयर हो गई है। बागवानी क्षेत्र में भी उत्पादन 3621 लाख टन तक पहुँचने का अनुमान है। ये उपलब्धियाँ दर्शाती हैं कि हमारे किसानों की मेहनत, वैज्ञानिकों की शोधपरक क्षमता और मोदी सरकार की किसान कल्याणकारी नीतियां मिलकर कृषि क्षेत्र को नित-नई ऊंचाइयों पर ले जा रही हैं।

व्यापक विजन, समग्र सोच, स्पष्ट नीति और नेक इरादों के साथ किसानों की आय बढ़े, उनके पसीने का उचित मूल्यांकन हो और वे आत्मनिर्भर बन सकें, इसके लिए केंद्र सरकार ने 6 सूत्रीय रणनीति बनाई है। उत्पादन बढ़ाने, उत्पादन की लागत घटाने, उत्पादन के ठीक दाम देने, प्राकृतिक आपदा में राहत की ठीक राशि देने, कृषि का विविधीकरण तथा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय गंभीरतापूर्वक कार्य कर रहा है।

'विकसित कृषि संकल्प अभियान' किसानों के जीवन को बेहतर बनाने का एक महाभियान है। मेरी किसान भाइयों-बहनों से अपील है कि आप सभी इस महाअभियान से जुड़ें, इस कार्यक्रम का लाभ उठाएं। वैज्ञानिकों द्वारा दी गई सलाह को मानकर अपनी कृषि को उन्नत करें। उत्पादन बढ़े, लागत घटे और किसानों को लाभ हो, इसी उद्देश्य के साथ विकसित कृषि का यह महायज्ञ है, जो विकसित भारत का आधार बनेगा।

(लेखक भारत सरकार में कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास केन्द्रीय मंत्री हैं)

अनमोल वचन

दंड हर किसी को नियम के अंदर रखता है। यह लोगों को उद्दंडता से बचाता है।

– महाभारत

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

ज्येष्ठ शुक्ल/आषाढ़ कृष्ण पक्ष विक्रम संवत 2082 ईस्वी सन् 2025

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
03 जून 25	मंगलवार	ज्येष्ठ शुक्ल-08	
04 जून 25	बुधवार	ज्येष्ठ शुक्ल-09	
05 जून 25	गुरुवार	ज्येष्ठ शुक्ल-10	गंगा दशहरा
06 जून 25	शुक्रवार	ज्येष्ठ शुक्ल-11	निर्जला एकादशी व्रत
07 जून 25	शनिवार	ज्येष्ठ शुक्ल-12	
08 जून 25	रविवार	ज्येष्ठ शुक्ल-12	प्रदोष व्रत
09 जून 25	सोमवार	ज्येष्ठ शुक्ल-13	
10 जून 25	मंगलवार	ज्येष्ठ शुक्ल-14	
11 जून 25	बुधवार	ज्येष्ठ शुक्ल-15	स्नानदान पूर्णिमा
12 जून 25	गुरुवार	आषाढ़ कृष्ण-01	
13 जून 25	शुक्रवार	आषाढ़ कृष्ण-02	
14 जून 25	शनिवार	आषाढ़ कृष्ण-03	गणेश चतुर्थी व्रत
15 जून 25	रविवार	आषाढ़ कृष्ण-04	
16 जून 25	सोमवार	आषाढ़ कृष्ण-05	पंचक 11.37 दिन से

क्यों जरूरी है, ग्रीष्मकालीन जुताई

- डॉ. मुकेश सिंह ● डॉ. गायत्री वर्मा
- डॉ. डी.के. तिवारी
- डॉ. एस.एस. धाकड़
- डॉ. जी.आर. अम्बावतिया

कृषि विज्ञान केन्द्र, शाजापुर (म.प्र.)
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय,ग्वालियर (म.प्र.)

रबी फसलों की कटाई का महत्वपूर्ण कार्य मार्च के अन्तिम सप्ताह तक या अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक लगभग पूर्ण कर लिया जाता है, जब रबी फसलों की खेत से कटाई की जाती है, तब खेत में इतनी नमी रहती है कि खेतों की गहरी जुताई आसानी से की जा सकती है।

कुछ ऐसे सिंचित क्षेत्र जहां फसलें देरी से बोई जाती हैं। उन क्षेत्रों में भी अप्रैल के द्वितीय सप्ताह तक सभी खेत खाली हो जाते हैं और किसान भाईयों के पास खेतों की गहरी जुताई करने का समय मिल जाता है अत: मई और जून के महीनों में तापमान लगभग 40-45 सेन्टीग्रेड तक पहुंच जाता है। इतने अधिक तापमान पर खेतों में फसलों को हानि पहुचाने रोगाणु कीटों के अण्डे, कीटों की शंखी अवस्था खेत जुतने से ऊपरी सतह पर आ जाते हैं और सूर्य की तपन से नष्ट हो जाते हैं।

फसलों को हानि पहुचाने वाले रोगाणु, रोगजनक, कीड़े खरपतवारों के बीज फसलों की कटाई के पश्चात् भूमि की दरारों (खाली जगहों) में सुसुप्तावस्था में पड़े रहते हैं और जब अगली फसल की बुवाई की जाती है और अनुकूल मौसम मिलने पर पुन: सक्रिय होकर फसलों को हानि पहुँचाना प्रारम्भ कर देते हैं।

खेतों में फसलों की बुवाई के समय बार-बार एक निश्चित गहराई पर 6-7 इंच पर बखर या हेरो चलाने से खेतों में नीचे एक कड़ी परत बन जाती है जिससे वर्षा का सम्पूर्ण पानी खेतों द्वारा नहीं सोखा जाता है, जिससे पानी खेतों से बाहर निकल जाता है, और अपने साथ मिट्टी और फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों को भी वहा ले जाता है, ग्रीष्मकालीन जुताई 9-12 इंच तक मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करने पर यह कड़ी परत टूट जाती है और वर्षात का पानी खेतों द्वारा अधिक मात्रा में सोख लिया जाता है। मिट्टी धूप तपने से भी भुरभुरी हो जाती है और मिट्टी में वायु का संचार बढ़ जाता है और खेतों की जल धारण क्षमता बढ़ जाती है, ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई से अनेक लाभ होते हैं।

खरपतवार नियंत्रण: फसलों के लिए खरपतवार एक बड़ी समस्या है। कभी-कभी इनके कारण उत्पादन 20-60 प्रतिशत तक कम प्राप्त होता है। कुछ ऐसे खरपतवार जैसे कांश, मौथा, दूव इनकी जड़ें भूमि में काफी गहराई तक चली जाती है जिसके कारण निदाई-गुड़ाई एवं खरपतवारनाशी रसायनों से पूर्ण नियंत्रण नहीं हो पाता है। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करने से इन खरपतवारों के राइजोम, जड़ें निकल आती हैं और सूर्य की तपन से सूख कर नष्ट हो जाती हैं और धीरे-धीरे खेतों से खरपतवार की समस्या कम हो जाती है।

जल संरक्षण: अधिकांशत: किसान भाई फसलों की आवश्यकता के अनुसार एक निश्चित गहराई पर 6-7 इंच लगातार जुताई करते हैं जिससे इस गहराई के नीचे मिट्टी की एक कड़ी परत बन जाती है। जिसके कारण खेतों में जल को अंत: करण करने में बाधा उत्पन्न करती है अत: अप्रैल महीने में गहरी जुताई (9 इंच से गहरी) करने से यह कड़ी सतह टूट जाती है जिससे वर्षा का सम्पूर्ण पानी खेतों द्वारा सोख लिया जाता है जिससे जल स्तर बढ़ जाता है।

कीट व्याधि नियंत्रण में: रबी की फसलों को हानि पहुंचाने (रोग के रोगजनक, कीट लाख) वाले रोग के रोगजनक, रोगाणु हानिकारक कीड़े फसल की कटाई के बाद खेतों में ही खेतों की दरारो में सुसुप्तावस्थ में पड़े रहते हैं और जब अगली फसल बोई जाती है तो रोगजनक रोगाणु कीड़े सक्रिय लेकर फसलों को हानि पहुंचाना प्रारम्भ कर देते हैं। कभी-कभी इन रोगाणुओं एवं कीटों के कारण सम्पूर्ण फसल नष्ट हो जाती है। ग्रीष्मकालीन जुताई से रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई हो जाने से ये रोगजनक, कीड़े भूमि की ऊपरी सतह पर आ जाते हैं और सूर्य की तपन से नष्ट हो जाते हैं जिससे इन रोगजनकों एवं कीटों से होने वाले नुकसान से अगली फसल को बचाया जा सकता है।

मृदा उर्वता में वृद्धि: पृथ्वी पर पाए जाने वाले वायुमंडल में सबसे अधिक मात्रा में नाइट्रोजन गैस होती है जो कि फसलों के लिए अमोनिया रूप में नत्रजन उपलब्ध कराती है। विभिन्न रासायनिक क्रियाओं के कारण यह गैस वर्षा के जल में घुल जाती है। जब पहली बारिस का पानी गिरता है तो उसमें नत्रजन की अधिक मात्रा होती है जो फसलों के लिए आवश्यक है। खेत गहरे जुते होने पर यह वर्षा का सम्पूर्ण पानी खेतों द्वारा सोख लिया जाता है तो खेतों की उर्वरता में वृद्धि एवं जल धारा क्षमता में वृद्धि होती है। खेत जुते होने से वर्षात में मृदा कटाव से खेतों को बचाया जा सकता है साथ ही मिट्टी के साथ पोषक तत्वों को भी बहने से वचाया जा सकता है।

ग्रीष्मकालीन जुताई में कुछ बातें ध्यान रखें

रबी फसल की कटाई हो जाने के तुरन्त बाद खेतों में पर्याप्त नमी रहती है अत: तुरंत जुताई करें। विलम्ब से जुताई करने पर मिट्टी सूर्य की तेज धूप से कड़ी हो जाएगी जिससे गहरी एवं अच्छी जुताई नहीं होगी।

- खेतों की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करे ताकि मिट्टी बड़े-बड़े ढेलों के रूप में रहे जिससे गर्म लू जमीन में गहराई तक जाकर रोगजनकों एवं कीटों की शंखी अवस्था आदि को नष्ट कर दें।
- ग्रीष्मकालीन जुताई प्रत्येक वर्ष प्रत्येक खेत की करें, यह आवश्यक नहीं है। इसके लिए खेतों को 3 हिस्सों में बांटकर प्रत्येक वर्ष एवं हिस्से की गहरी जुताई करें। इस प्रकार हर 3 वर्ष के अंतराल में प्रत्येक खेत की जुताई की जा सकती है। जुताई करते समय खेत के चारों और मेड़ बंधान करना आवश्यक है, वर्षा का पानी खेतों से बाहर नहीं जा सकेगा और पानी को जमीन सोख लेगी और खेतों की उर्वरता बरकरार रहेगी।

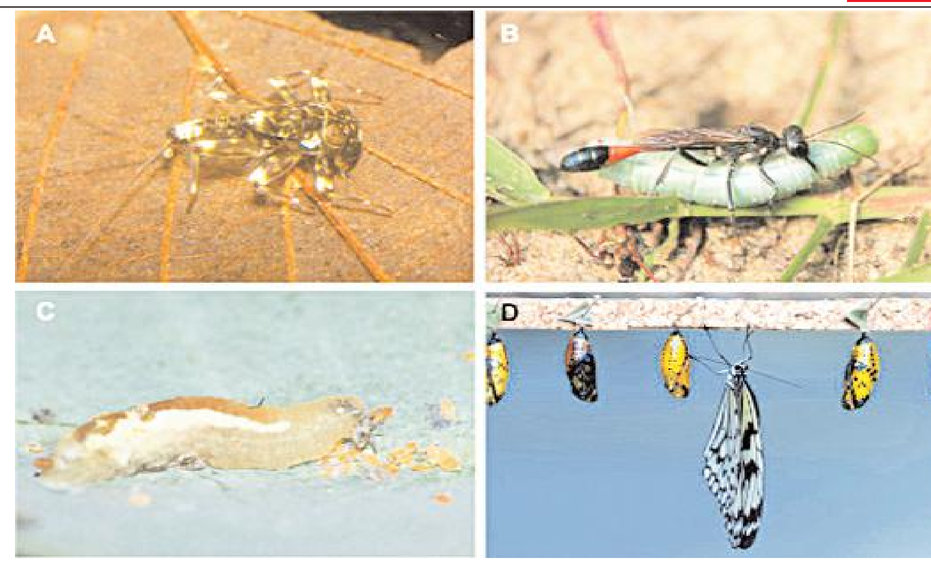

कीट जैव विविधता एवं जैविक कीट प्रबंधन में कृषि मित्र कीटों की भूमिका एवं उनका सरंक्षण

- ब्रजेश कुमार नामदेव
- राजेंद्र पटेल • संजीव कुमार गर्ग
  कृषि विज्ञान केंद्र गोविन्दनगर, नर्मदापुरम (म.प्र.)
- अनिल कुर्मी
  कृषि विज्ञान केंद्र अमरकंटक, अनूपपुर (म.प्र.)

कृषि भूमि पर पाए जाने वाले कई कीट हैं जो फसल उत्पादन के लिए खतरा नहीं हैं, लेकिन विभिन्न पहलुओं में किसानों के लिए लाभकारी हैं, जैसे कि प्राकृतिक दुश्मन, परागणक, आर्थिक उत्पादक कीट आदि।

वर्तमान परिदृश्य में किसानों का लक्ष्य केवल लाभकारी कीटों, पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव की अनदेखी करते हुएअधिकतम लाभ प्राप्त करना। कीटनाशक उपज को अधिकतम करने के लिए एक महत्वपूर्ण फसल उत्पादन उपकरण हो सकता है लेकिन रसायनों का भारी और अंधाधुंध उपयोग किसानों को गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों के लिए भी उजागर करता है।

फसल उत्पादन में हानिकारक शत्रुओं जैसे कीट, रोग, खरपतवार इत्यादि को नष्ट करने हेतु समय-समय पर अनेक रसायन विकसित होते रहते हैं, लेकिन इससे अल्पकालिक सुरक्षा तो अवश्य मिली लेकिन दीर्घकालीन समस्याएं भी उत्पन्न हो गई हैं जैसे- खाद्य पदार्थों में हानिकारक रसायनों का अवशेष, जीवनाशियों में रसायनों के प्रतिरोध क्षमता का विकास, लाभदायक कीटों (पेरासिटॉयड्, प्रेडेटरों, मधुमक्खी परागण करने वाले कीट आदि) का विनाश आदि।

हानिकारक कीटों की संख्या एवं उनके द्वारा होने वाली हानि के स्तर को कम करने हेतु परजीवी, व्याम, परभक्षी, रोगाणु, एटोगोनिस्टिक फफूंद एवं प्रति स्पर्धात्मक जीवों का उपयोग जैविक नियंत्रण कहलाता है। जैविक कीट प्रबंधन का अर्थ है कि जैविक उत्पाद फफूंद जीवाणु, मित्र कीट-पतंगों के सामंजस्य के बिना रसायनों के फसलों के हानिकारक कीटों का नियंत्रण।

जैविक नियंत्रण का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसके परिणाम जैविक कीट नियंत्रण क्षेत्र विशेष में स्थापित होने के बाद वह स्वयंमेव कार्य करता है। यह कम खर्चीला होने के साथ सुरक्षित भी है। फसलों पर हानिकारक अवशेष नहीं छोड़ते, हानिकारक कीटों को विशेष रूप से नष्ट करते हैं। कीटों एवं रोगों के विरूद्ध फसलों में प्रतिरोधक क्षमता का विकास करते हैं। जैविक कीट व्याधि प्रबंधन में विभिन्न प्रकार की क्रियायें अपनाई जाती हैं, जिनमें से सस्य क्रियाएं, यात्रिकी क्रियाएं तथा जैविक क्रियाएं प्रमुख हैं।

सामन्यतय: किसान बन्धु जैसे ही फसल में कोई भी कीट देखता है, वो तुरंत उसे खत्म करने के लिए विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों का छिड़काव करना प्रारंभ कर देते हैं बिना ये जाने कि फसल में जो कीट हैं वो शुत्रु कीट हैं या मित्र कीट-परजीवी एवं परभक्षी इसलिए किसान बंधुओं को ये जानकारी होना अति आवश्यक है कि कौन-कौन से कीट उनके मित्र और कौन-कौन से उनके शत्रु कीट है, सबसे पहले किसान बन्धुओं को ये जानकारी होनी चाहिए कि शत्रु कीट वे कीट होते हैं जो आपकी फसलों को नष्ट करते या नुकसान पहुचाते हैं एवं मित्र कीट (परजीवी एवं परभक्षीद्ध), पोलिनेटर (मधु मक्खियाँ, तितलियाँ) वे कीट होते हैं जो आपकी खेती को न सिर्फ शत्रु कीटों से रक्षा करते हैं बल्कि फसलों के अधिक उत्पादन बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

परजीवी मित्र कीट

ट्राइकोग्रामा प्रजातियां: ट्रा.जेपोनिकम, ट्रा. चिलोनिस, ट्रा. प्रिटीयोसम, ब्रैकोन हेबेटोर और ब्रैकोन ब्रेविकोर्निस, टेलीनोमस रेमसए चेलोनस ब्लैकबर्नी आदि।

▸ परभक्षी मित्र कीट रूक्राइसोपर्ला (ग्रीन लेस विंग), रेडुविडबग, लेडीबर्ड बीटल आदि।

परभक्षी मकड़ी: भेड़िया मकड़ी, चार जबड़े वाली मकड़ी, बौनी मकड़ी, थैली वाली मकड़ी, गोल मकड़ी, हली बग मकड़ी, गोलाकार मकड़ी, कूदने वाली मकड़ी धान के खेतों में पायी जाती है जो विभिन्न प्रकार के फुदकों, मैगेट, पत्ती लपेटक इत्यादि कीटों के शिशु, लार्वा और प्रौढ़ को खाकर प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करती हैं। इन कीटों को संरक्षित करना चाहिए।

अन्य परजीवी कीट: ये परजीवी सिरफिड फ्लाई, कम्पोलेटिस क्लोरिडी, अपेन्टेलिस- इपीरीकेनिया मेलानोल्यूका इत्यादि परजीवी कीट विभिन्न प्रकार के फसलों, सब्जियों और गन्ना के खेतों में पाये जाने वाले कीटों के लार्वा, शिशु और प्रौढ़ को अन्दर ही अन्दर खाकर प्राकृतिक रूप से कीट का नियंत्रण करते हैं। आज इन मित्र परजीवी कीटों का संरक्षण करना बहुत ही आवश्यक है।

अन्य परभक्षी कीट: प्रेइंग मेन्टिस, ड्रैगन फ्लाई, ग्राउण्ड बीटिल, रोल बीटिल, वाटर बग, मिरिड बग इत्यादि फसलों, सब्जियों और बागों आदि के खेतों में पाये जाते हैं, जो हानिकारक कीटों के लार्वा, शिशु तथा प्रौढ़ को प्राकृतिक रूप से खाकर नियंत्रण करते हैं।

जैव विविधता में कृषि मित्र कीटों की भूमिका

परागण: कई कृषि मित्र कीट, जैसे कि मधुमक्खी, परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं एवं परागण फसलों के उत्पादन और जैव विविधता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

जैविक नियंत्रण: क्राइसोपर्ला (ग्रीन लेस विंग), रेडुविडबग, लेडीबर्ड बीटल आदि और प्रेइंग मैन्टिस, अन्य हानिकारक कीटों को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। इससे रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग की आवश्यकता कम हो जाती है, जो पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं।

पोषक तत्वों का चक्रण: कुछ कीट जैसे कि भृंग, कार्बनिक पदार्थों को अपघटित करके पोषक तत्वों को मिट्टी में वापस लौटाने में मदद करते हैं, जो पौधों के लिए आवश्यक हैं।

जैव विविधता को बढ़ावा देना: कृषि मित्र कीट एक विविध और स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करते हैं। ये कीट अन्य जीवों के लिए एक खाद्य स्रोत के रूप में काम करते हैं और पारिस्थितिक तंत्र के संतुलन को बनाए रखने में मदद करते हैं।

स्वास्थ्यवर्धक भोजन: जैविक खेती में कृषि मित्र कीटों के उपयोग से, किसानों को स्वस्थ और सुरक्षित भोजन प्रदान करने में मदद मिलती है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।

वाणिज्यिक उत्पादों के रूप में: शहद और मोम- शहद का उपयोग भोजन के रूप में और कई उत्पादों के निर्माण में बड़े पैमाने पर किया जाता है। उद्योग मोमबत्तियाँ, सीलिंग मोम, पॉलिश, कुछ प्रकार की स्याही, मॉडल या विभिन्न प्रकार, दंत छाप, सौंदर्य प्रसाधन और अन्य उत्पादों को बनाने में बड़े पैमाने पर मोम का उपयोग करता है। इसके अलावा रेशम- रेशम कीट द्वारा एवं लाख- लाख का उत्पादन लाख कीट के स्राव से होता है, लाख उत्पादन बेर, पलास, कोसम के वृक्षों पर मुख्य रूप से किया जाता है।

पर्यावरणीय स्वास्थ्य: कीटनाशकों के उपयोग को कम करने से जैव विविधता को लाभ होता है एवं स्थानीय जलमार्गों में रासायनिक अपवाह का जोखिम कम होता है, जिससे जलीय पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा होती है और पानी की गुणवत्ता में सुधार होता है।

कृषि मित्र कीट जैव विविधता के लिए महत्वपूर्ण हैं और वे कृषि उत्पादकता को बढ़ाने, पर्यावरण प्रदूषण को कम करने और मानव स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। इसलिए हमें इन कीटों को संरक्षित करने और उनकी भूमिका को समझने के लिए काम करना होगा जिसके लिए अपनी कृषि क्रियायों में निम्नलिखित सुझावों को सम्मलित किया जा सकता है।

बायो एजेंट्स का उपयोग: कृषि में मित्र कीटों के संरक्षण एवं जैविक खेती में कीट नियंत्रण की एक महत्वपूर्ण रणनीति है। जिसमे मित्र कीट (परजीवी एवं परभक्षी), शत्रु कीटों से रक्षा करते उत्पादन बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कीट, कुछ प्रकार के पतंगे, हानिकारक कीटों को नियंत्रित करने में मदद करते हैं और फसलों को नुकसान से बचाते हैं।

जैविक कीटनाशकों का उपयोग: प्राकृतिक रूप से प्राप्त कीटनाशकों, जैसे कि नीम का तेल, का उपयोग हानिकारक कीटों को नियंत्रित करने में मदद करता है, जबकि मित्र कीटों को नुकसान नहीं पहुंचाता है।

प्रपंच फसल (ट्रैप क्रॉप) फसल का उपयोग: मुख्य फसल के आसपास ऐसी फसलें लगाएं जो हानिकारक कीटों को आकर्षित करें, जिससे वे मुख्य फसल को कम नुकसान पहुंचाएं।

प्राकृतिक शत्रुओं को बढ़ावा देना: मित्र कीटों को बढ़ावा देने के लिए उनके आवास और भोजन के स्रोतों को बनाए रखें। उदाहरण के लिए फूलों वाले पौधे लगाएं जो मधुमक्खियों एवं अन्य मित्र कीटों को आकर्षित करते हैं।

फसल चक्र अपनाना: एक ही जगह पर एक ही फसल को बार-बार न लगाएं। फसल चक्र अपनाने से हानिकारक कीटों की संख्या कम होती है और मित्र कीटों को बढ़ावा मिलता है।

कीटनाशकों का निम्नतम उपयोग: रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग से मित्र कीटों को नुकसान हो सकता है। इसलिए उनका उपयोग कम से कम करें और जैविक नियंत्रण विधियों का उपयोग करने का प्रयास करें।

जैविक नियंत्रण कीट समस्याओं का स्थायी समाधान प्रदान कर सकता है, जिससे महंगे कीटनाशक इनकी अनुप्रयोग लागतों की आवश्यकता कम हो जाती है एवं लाभकारी कीटों में निवेश करने से दीर्घकालिक बचत हो सकती है। लाभकारी कीटों की शक्ति व इन छोटे जीवों के महत्व को पहचानकर, किसान एक स्वस्थ कृषि परिस्थिति तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं, जिससे अंतत: न केवल उनकी फसलों को बल्कि व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र को भी लाभ होगा।

मनावर जिला धार में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

रमेश एम. पटेल

ग्राम- जोतपुर, तहसील- मनावर, जिला-धार (म.प्र.)

मो. 8959691006

● मनीषा पाठक ● अभिषेक यादव
● रोहित कुमार यादव
पीएचडी शोधार्थी (उद्यानिकी विभाग)
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

खीरा की वैज्ञानिक खेती

खीरा गर्मियों की एक आम कुकुर्बिटेसियस सब्जी है। खीरे का पौधा एक लता के रूप में, चढ़ाई या अनुगामी आदत है। कोमल फलों को सलाद में कच्चा या नमक के साथ खाया जाता है। इनका उपयोग पकी हुई सब्जियों के रूप में भी किया जाता है। कब्ज, पीलिया और अपच से पीड़ित लोगों के लिए फल अच्छे होते हैं। इसके अलावा खीरे का उपयोग सौंदर्य प्रसाधनों और त्वचा की देखभाल में भी किया जाता है।

जलवायु और मिट्टी

खीरे की खेती के लिए नम और आर्द्र जलवायु सबसे उपयुक्त मानी जाती है। इसके अच्छे उत्पादन के लिए 18 से 30 डिग्री सेन्टीग्रेड तक का तापमान आदर्श होता है। अत्यधिक ठंड या अधिक गर्मी खीरे के विकास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। खीरे की खेती के लिएअच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है।

खेत की तैयारी

खीरे की अच्छी फसल के लिए मिट्टी का पी.एच. मान 6.0 से 7.0 के बीच होना चाहिए। खेत की अच्छी तरह जुताई करें ताकि मिट्टी भुरभुरी और समतल हो जाए। 2-3 बार खुरपी या हल से जुताई करें। अंतिम जुताई के समय खेत में अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद या कंपोस्ट मिलाएं। इससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ेगी और फसल को पोषण मिलेगा।

उन्नत किस्में

पॉइंसेट: खीरे की किस्म अपनी बेहतरीन स्लाइसिंग गुणवत्ता के लिए जानी जाती है। यह गर्म मौसम में उगाई जाने वाली फसल है जो सीधे गहरे हरे रंग के और बेलनाकार फलों का उत्पादन करती है। यह अपनी कुरकुरी बनावट, मीठे स्वाद और अच्छी उपज के लिए भी प्रसिद्ध है। जिनकी औसत लंबाई 7 से 9 इंच होती है। यह किस्म पाउडरी मिल्ड्यू और डाउनी मिल्ड्यू जैसे रोगों के प्रति अपनी प्रतिरोधक क्षमता के लिए जाना जाता है।

पूसा उदय: यह किस्म अपनी हल्की हरी, मध्यम आकार की फलियों के लिए जानी जाती है, जो सामान्यत: 15 सेंटीमीटर लंबी होती हैं। यह किस्म लगभग 50-55 दिनों में परिपक्व हो जाती है।

फुले शुभांगी: यह किस्म गहरे हरे रंग के गद्देदार (क्लब-आकार) फलों का उत्पादन करती है, जिन पर 7-8 निरंतर धारियाँ होती हैं। फल मध्यम लम्बाई और मोटाई वाले होते हैं, जो अचार बनाने और निर्जलीकरण के लिए उपयुक्त होते हैं। यह किस्म अपने उच्च उपज संभावनाओं और बहुपयोगी विशेषताओं के लिए जानी जाती है जैसे कि सलाद और अचार बनाने के लिए उपयोगी है।

पूसा सीडलैस खीरा: यह एक उन्नत किस्म है जो पर्थेनोकार्पिक (बिना बीज वाले फल) और गाइनोशियस (केवल मादा फूलों वाली) खीरे की प्रजाति से संबंधित है। पहली तुड़ाई के लिए यह किस्म बुवाई के 40-45 दिनों के भीतर तैयार हो जाती है। इसके फल आकार में एक समान होते हैं, गहरे हरे रंग के, चमकदार, बेलनाकार, सीधे, हल्की धारियों वाले, बिना रोयों, बिना दानों या गाठों के होते हैं। फूल वाले सिरे पर हल्की धारियां होती हैं। इसका छिलका कोमल और गूदा कुरकुरा होता है। यह किस्म सलाद और ताजा उपयोग के लिए विशेष रूप से उपयुक्त मानी जाती है।

पूसा वर्षा खीरे: यह एक अति प्रारंभिक किस्म है, जिसे उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में खरीफ मौसम के लिए विकसित किया गया है। यह किस्म अपनी उच्च उपज क्षमता और उच्च आर्द्रता, अधिक तापमान तथा डाउनी मिल्ड्यू जैसी प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रति सहनशीलता के लिए जानी जाती है। यह किस्म बुवाई के 40.45 दिनों के भीतर पहली तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती है।

खाद और उर्वरक

भूमि की तैयारी के समय 10-15 टन प्रति हेक्टेयर की दर से अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की सदी हुई खाद डालें। रोपण के समय 100:60:60 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से एनपीके डालें।

बुवाई: बुवाई से पहले बीजों का फफूंदनाशक (जैसे थाइरम या कार्बेन्डाजिम) से उपचार करें। इससे बीज जनित रोगों से बचाव होता है और अंकुरण बेहतर होता है। बीजों को 2-3 सेंटीमीटर की गहराई पर बोएं। ज्यादा गहराई पर बुवाई करने से अंकुरण में बाधा आ सकती है।

बुआई की दूरी

पंक्ति से पंक्ति की दूरी: 90 सेंटीमीटर पौधे से पौधे की दूरी, 45 सेंटीमीटर उचित दूरी रखने से पौधों को हवा, धूप और पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा मिलती है, जिससे रोग कम लगते हैं और उपज अच्छी होती है।

बीज की मात्रा एवं बुआई का समय

बीज दर 2.5 से 3.5 किलो प्रति हेक्टेयर खीरे की खेती गर्मी और बरसात दोनों मौसम की फसल के रूप में की जाती है। गर्मी की फसल जनवरी से फरवरी, बरसात की फसल जून से जुलाई में बीज बोए जाते हैं।

सस्य क्रियायें

सहारा देना: पौधों को बांस की छड़ियों से बना एक उपयुक्त सहारा प्रदान किया जाना चाहिए, खास तौर पर बरसात के मौसम में ताकि फलों को सड़ने से बचाया जा सके। गर्मी की फसलों को 4-5 दिनों के अंतराल पर लगातार सिंचाई की आवश्यकता होती है।

तुड़ाई और उपज

खीरे के पूरी तरह विकसित लेकिन हरे फल की तुड़ाई करनी चाहिए। यदि तुड़ाई में देर की जाए तो फल पीले पड़ने लगते हैं और उनका बाजार मूल्य घट जाता हैस जिससे वे विपणनके लिए अनुपयुक्त हो जाते हैं। नियमित अंतराल पर तुड़ाई करना फसल की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए जरूरी है। खीरे की औसत उपज लगभग 80 से 120 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। उपज मिट्टी, जलवायु, प्रबंधन और किस्म के अनुसार भिन्न हो सकती है।

पौध संरक्षण

लाल कद्दू बीटल: इस कीट के लार्वा और वयस्क दोनों पौधों को नुकसान पहुँचाते हैं। ये कीट अंकुरण और फूल आने की अवस्था में पौधों की कोमल पत्तियों और फूलों को खा जाते हैं। इसके लार्वा जड़ों और जमीन पर पड़े फलों में छेद करते हैं और मिट्टी में प्यूपा बनाते हैं। इस कीट पर नियंत्रण के लिए हाथ से चुनकर हटाना और मिट्टी में केरोसिन मिली राख डालना प्रभावी उपाय हैं। इसके अतिरिक्त उसल परमैलेथियॉन 50 ईसीको 2 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने की भी सलाह दी जाती है। (शेष पृष्ठ 10 पर)

खेती को फायदेमंद बनाने का नायाब तरीका सीखें

क्या आपकी जमीन से खेती करके आपको कम आमदनी मिल रही है जिससे आप अपने खेती के खर्च को पूरा कर सकें? क्या आप खेती से निराश हो गए हैं और एक नया उपाय खोज रहे हैं जो आपको अधिक लाभ दे सके? यदि हाँ, तो हम आपके लिए एक नया अवसर लेकर आए हैं। आपकी खाली जमीनों, खेतों से लाखों-करोड़ों की कमाई करने के लिए हमारे साथ जुड़ें। हम आपको जमीन के चयन से लेकर फसल लगाने, उत्पादन और उत्पादन के शत-प्रतिशत विपणन तक की पूरी तकनीकी जानकारी और मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

हम आपसे एक खेती की बात कर रहे हैं जो आपको अधिक लाभ प्रदान कर सकती है। AT और BP के पौधों की खेती एक बहुत ही उपयुक्त विकल्प है, जो आपको अधिक मुनाफा दे सकती है। इन पौधों की विशेषता और पोषण के कारण, इससे बाजार में उत्तम मूल्य मिल सकता है और आपको अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

एक एकड़ जमीन में 800 ऑस्ट्रेलियन टीक और 800 काली मिर्च फसल की खेती कर के आप साल का लाखों करोड़ों कमा सकते हैं।

* 30 सालों में 7 बार देश का सर्वश्रेष्ठ किसान का अवार्ड प्राप्त करने वाले अनुभवी किसानों के साथ एक दिशानिर्देश।
* देश का सर्वप्रथम सर्टिफाइड ऑर्गेनिक हर्बल फार्मस के साथ मां दंतेश्वरी हर्बल समूह का समर्थन और संयुक्त विपणन
* कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों के साथ-साथ मिलेनियर फार्मर/रिचेस्ट फार्मर ऑफ इंडिया का अवार्ड भी दिया गया है मां दंतेश्वरी हर्बल समूह के डॉक्टर राजाराम त्रिपाठी को।

fssai SAMPDA

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें :
मुख्य कार्यालय: मां दंतेश्वरी हर्बल ग्रुप
151, हर्बल इस्टेट, कोंडागांव बस्तर (छत्तीसगढ़) 494226
ईमेल- mdhorganic@gmail.com
प्रशासकीय कार्या. : जी 14 हर्बल इस्टेट, एचआर टावर के बगल में, अग्रसेन नगर (पुरानी अशोका कॉलोनी) रिंग रोड-1, रायपुर (छत्तीसगढ़) - 492013
मो. : 9425265105
फोन : 0771-2263433
सूचना: कृपया कार्यालयीन दिवसों में सुबह 11:00 से 5:00 संध्या के बीच ही फोन करें।

जून माह में उद्यानिकी फसलों में किए जाने वाले विभिन्न कृषि कार्य

- संदीप कुमार शर्मा
- डॉ. संजय सिंह

कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा (म.प्र.)
जवाहर लाल नेहरू कृषि विवि., जबलपुर (म.प्र.)

बसंत के जाते ही बढ़ते तापमान के साथ ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है जिसका बागों में की जाने वाले कृषि क्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है। इन दिनों जहां सदाबहार फल वृक्षों जैसे- आम, अमरूद, नींबूवर्गीय फलों के नए बाग स्थापित करने की शुरुआत होती है। वहीं आम की अगेती किस्मों के पके फलों को बाजार भेजने की तैयारी भी करनी होती है।

अमरूद

यह महीने अमरूद के फलों के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। गर्मियों के समय में वातावरण शुष्क हो जाता है जिससे मृदा में पानी की कमी होने लगती है। अत: उचित समय पर सिंचाई नहीं होने पर फलों की वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। जिसके परिणामस्वरूप फल छोटे रह जाते हैं। इसलिए 8-10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। मई में यदि बगीचों में फल मक्खी अथवा अन्य कीटों का प्रकोप हो तो क्विनोल्फॉस 25 ईसी का 2 मिली प्रति लीटर या मेलाथियान 50 ईसी का 1 मिली प्रति लीटर या 3 प्रतिशत नीम के तेल का छिड़काव करें। छिड़काव प्रात: काल या देर शाम में 21 दिनों के अंतराल पर कम से कम 4 बार करना चाहिए। जून में नए अमरूद के बागों की स्थापना के लिए खेत को भली-भांति तैयार किया जाता है। पौधे लगाने के लिए गड्ढों को 3.3 मीटर दूरी पर खोदा जाता है। प्रत्येक गड्ढे को 10 किग्रा गोबर की सड़ी खाद, 1 किग्रा नीम की खली, 50 ग्राम क्लोरपाइरीफॉस की धूल एवं ऊपरी मिट्टी के साथ मिलाकर भरा जाना चाहिए। पौधों में जिंक की कमी हो जाने पर पत्तियां छोटी एवं पीली हो जाती हैं। इसके नियंत्रण के लिए आधा किग्रा जिंक सल्फेट और आधा किग्रा बुझे हुए चूने का घोल 100 लीटर पानी में बनाकर इसका छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर 2-3 बार करना चाहिए।

आम

मानसून के आगमन से पूर्व नए बाग लगाने के लिए मई में उचित दूरी पर बाग का रेखांकन निशान लगाने के बाद गड्ढे खोदने का कार्य पूरा कर लेना चाहिए। नर्सरी में बीज पौधों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए एवं खरपतवार निकाल देने चाहिए। पके हुए फलों का चिड़ियों आदि से बचाव करना चाहिए। फलों की आंतरिक सड़न रोकने लिए बोरेक्स 4 किग्रा 100 लीटर का छिड़काव करना चाहिए।

जून में नीचे गिरे फलों को इकट्ठा कर इन्हें स्थानीय बाजारों में भेजने की व्यवस्था करनी चाहिए। पेड़ों के नीचे की जमीन साफ-सुथरी होनी चाहिए। यदि अगेती किस्म के फल पक गए हैं, तो ऐसी स्थिति में उन्हें तोड़कर बाजार भेजने की उचित व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

जून में नए अमरूद के बागों की स्थापना के लिए खेत को भली-भांति तैयार किया जाता है। पौधे लगाने के लिए गड्ढों को 3.3 मीटर दूरी पर खोदा जाता है। प्रत्येक गड्ढे को 10 किग्रा गोबर की सड़ी खाद, 1 किग्रा नीम की खली, 50 ग्राम क्लोरपाइरीफॉस की धूल एवं ऊपरी मिट्टी के साथ मिलाकर भरा जाना चाहिए। पौधों में जिंक की कमी हो जाने पर पत्तियां छोटी एवं पीली हो जाती हैं। इसके नियंत्रण के लिए आधा किग्रा जिंक सल्फेट और आधा किग्रा बुझे हुए चूने का घोल 100 लीटर पानी में बनाकर इसका छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर 2-3 बार करना चाहिए।

मानसून के दौरान अनार के नए बाग लगाने हेतु रेखांकन एवं गड्ढे खोदने का कार्य भी मई-जून में ही पूर्ण कर लेना चाहिए। सामान्यत: 4-5 मीटर की दूरी पर अनार का रोपण किया जाता हैं। पौध रोपण के एक माह पूर्व 60 गुणा 60 गुणा 60 सेंमी आकार के गड्ढे खोदकर 15 दिनों के लिए खुले छोड़ देने चाहिए। इसके बाद गड्ढे की ऊपरी मिट्टी में 10-15 किग्रा गोबर की सड़ी खाद, 1 किग्रा सिंगल सुपर फॉस्फेट, 50 ग्राम क्लोरोपायरीफॉस चूर्ण मिट्टी में मिलाकर गड्ढों को सतह से 15 सेंमी ऊंचाई तक भर देते हैं। गड्ढे भरने के बाद सिंचाई करते हैं। ताकि खेत की मिट्टी भली-भांति बैठ जाए।

फालसा

फालसे के फलों की उचित बढ़वार के लिए 15 दिनों के अंतराल पर नियमित रूप से सिंचाई करते रहना चाहिए। फालसे में फलों का अच्छे से पकना अप्रैल के अंतिम सप्ताह में ही शुरू हो जाता है। जो कि जून माह के प्रथम सप्ताह तक जारी रहता है। इसके फल अत्यंत नाजुक होते हैं। अत: इनकी तुड़ाई सुबह या शाम को ही करनी चाहिए और तुरंत बाद फलों को बाजार में भेजने की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। फलों की समाप्ति के बाद पौधों की काट-छांट अवश्य करें। इसे जून के अंतिम सप्ताह तक समाप्त कर लेना चाहिए। उचित काट-छांट से फालसे के पौधे का आकार अच्छा रहता है व अगले वर्ष इसमें फसलें अच्छी व नियमित रूप से आती हैं।

आंवला

पौध रोपण के लिए गड्ढे जून में खोदते हैं तथा गड्ढे की दूरी किस्म के अनुसार 8-10 मीटर रखते हैं। जून में 1 गुणा 1 गुणा 1 मीटर आकार के गड्ढे खोद कर तैयार कर लेने चाहिए। इन्हें 15 दिनों के बाद 10 किग्रा गोबर की सड़ी खाद, 1 किग्रा नीम की खली, 50 ग्राम क्लोरपाइरीफॉस की धूल एवं ऊपरी मृदा के साथ मिलाकर भरना चाहिए। आंवले में स्वयं बंध्यता पाई जाती है। अत: कम से कम दो किस्में अवश्य लगाते हैं, जो एक-दूसरे के लिए परागणकर्ता का कार्य करती हैं।

आंवला एक पर्णपाती वृक्ष है। इसके पेड़-फल लगने के बाद गर्मियों के मौसम में सुषुप्तावस्था में प्रवेश कर जाते हैं। यह मानसून के आगमन तक उसी अवस्था में रहते हैं। इसलिए पौधों को गर्मियों के दौरान अन्य फसलों की तुलना में ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। हालांकि 10-15 दिनों के अंतराल पर हल्की सिंचाई लाभकारी होती है।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

जून माह में फसल उत्पादन से संबंधित कृषि कार्य

- संदीप कुमार शर्मा
- डॉ. संजय सिंह

कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा (म.प्र.)
जवाहर लाल नेहरू कृषि विवि., जबलपुर (म.प्र.)

यदि किसान भाई मई के अंतिम सप्ताह में धान की नर्सरी नहीं डाल पाएं हो तो वे जून के प्रथम पखवाड़े तक यह काम पूरा कर सकते हैं। वहीं सुगंधित प्रजातियों की नर्सरी जून के तीसरे सप्ताह में डालनी चाहिए।

- धान की मध्यम और देर से पकने वाली प्रजातियां अच्छी मानी गई हैं। इसमें धान की स्वर्णा, पंत-10, सरजू-52, नरेन्द्र-359, जबकि टा.-3, पूसा बासमती-1, हरियाणा बासमती सुगंधित तथा पंत संकर धान-1 व नरेन्द्र संकर धान-2 प्रमुख उन्नत संकर किस्में हैं।

धान की महीन किस्मों की प्रति हेक्टेयर बीज दर 30 किग्रा, मध्यम के लिए 35 किग्राए मोटे धान हेतु 40 किग्रा तथा ऊसर भूमि के लिए 60 किग्रा पर्याप्त होता है, जबकि संकर किस्मों के लिए प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।

- यदि नर्सरी में खैरा रोग दिखाई दे तो 10 वर्ग मीटर क्षेत्र में 20 ग्राम यूरिया, 5 ग्राम जिंक सल्फेट प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

25 जून तक पूरी कर लें मक्का की बुवाई

- यदि आप मक्का की बुवाई करना चाहते हैं तो इसकी बुवाई 25 जून तक पूरी कर लेनी चाहिए। यदि सिंचाई की सुविधा हो तो इसकी बुवाई का कार्य 15 जून तक भी पूरा किया जा सकता है।
- मक्का की उन्नत किस्मों में शक्तिमान-1, एच.क्यू.पी.एम.-1, संकुल मक्का की तरुण, नवीन, कंचन, श्वेता तथा जौनपुरी सफेद व मेरठ पीली देशी प्रजातियां अच्छी मानी जाती है।

जून के प्रथम सप्ताह में कर सकते हैं अरहर की बुवाई

यदि सिंचाई की सुविधा हो तो अरहर की बुवाई जून माह के प्रथम सप्ताह में की जा सकती है। वहीं सिंचाई की सुविधा का अभाव होने पर इसकी बुवाई वर्षा प्रारंभ होने पर ही करनी चाहिए।

- अरहर की उन्नत किस्मों में प्रभात व यू.पी.ए.एस.-120 शीघ्र पकने वाली तथा बहार, नरेंद्र अरहर-1 व मालवीय अरहर-15 देर से पकने वाली अच्छी किस्में हैं।
- अरहर की बुवाई के लिए प्रति हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 12-15 किग्रा बीज पर्याप्त होता है। अरहर के बीजों को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के बाद ही बोना चाहिए।

पशु चारे के लिए करें ज्वार, लोबिया व चरी की बुवाई

पशुओं के लिए हरे चारे की कमी को पूरा करने के लिए इस माह आप ज्वार, लोबिया और चरी जैसी चारे वाली फसलों की बुवाई कर सकते हैं। बारिश न होने की दशा में पलेवा देकर बुवाई की जा सकती है।

जून माह में करें इन सब्जियों की खेती

जून माह में आप बैंगन, मिर्च, अगेती फूलगोभी की पौध लगा सकते हैं। भिंडी की बुवाई का भी ये उपयुक्त समय है। इसके अलावा लौकी, खीरा, चिकनी तोरी, आरा तोरी, करेला व टिंडा की बुवाई भी इस माह की जा सकती है। भिंडी की उन्नत किस्मों में परभनी क्रांति, आजाद भिंडी, अर्का अनामिका, वर्षा, उपहार, वी.आरओ.-5, वी.आरओ.-6 व आई.आई.वी.आर.-10 भिंडी की अच्छी किस्में मानी जाती हैं।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

मप्र एवं छग की ACE ट्रैक्टर डीलर्स मीट का आयोजन

भोपाल/रायपुर। देश की अग्रणी ट्रैक्टर और कृषि मशीनरी निर्माता कंपनी ACE Ltd. (Action Construction Equipment Ltd.) ने हाल ही में रायपुर (छत्तीसगढ़) एवं भोपाल (म.प्र.) में एक भव्य डीलर मीट का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल ACE परिवार के सदस्यों को एक साथ लाना था बल्कि भविष्य की योजनाओं, तकनीकी उन्नति और ग्राहक सेवा को लेकर संवाद को और भी मजबूत करना था।

इस विशेष अवसर पर ACE के वरिष्ठ अधिकारियों और रीजनल टीम ने डीलर्स के साथ प्रत्यक्ष संवाद किया। उन्होंने कंपनी की आगामी योजनाओं, नए उत्पादों, तकनीकी नवाचारों और बाजार रणनीतियों के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की। डीलर मीट के दौरान डीलर्स ने भी अपने सुझाव, अनुभव और बाजार की जमीनी जरूरतों को खुलकर साझा किया। यह संवाद ACE के सुनो, समझो और साथ चलो दृष्टिकोण को और सशक्त करता है।

कार्यक्रम में ACE के हाल ही में लॉन्च किए गए ट्रैक्टर और कृषि मशीनरी रेंज को भी प्रदर्शित किया गया, जिससे डीलर्स को उनके फीचर्स और कार्यक्षमता को नजदीक से समझने का अवसर मिला। इस कार्यक्रम में मुख्य फाइनेंस पार्टनर्स चोला फाइनेंस, एचडीएफसी बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, इंडियन बैंक की प्रमुख पालिसी को विस्तार से साझा किया गया ताकि किसानों तक बेहतरीन प्रोडक्ट्स, कुशल सर्विसेज, कम इंटरेस्ट दर पर पहुंचाया जा सके। सभी बिजनेस पार्टनर्स पूर्ण रूप से मोटिवेटेड थे और चालू वित्त वर्ष की प्रथम तिमाही के बिजनेस प्लान का सत्यापन किया। कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले डीलर्स को मेहनत और समर्पण के लिए ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

बीएएसएफ ने लांच किया कीटनाशक व फफूंदनाशक

धान उत्पादक किसानों के लिए लाभकारी उत्पाद

हैदराबाद। बीएएसएफ ने अपने दो नवीनतम वैश्विक फसल सुरक्षा समाधान वेलेक्सियोTM कीटनाशक तथा मिबेल्याTM फफूंदनाशक लॉन्च किए हैं, जो कि भारत की सबसे महत्वपूर्ण अनाज की फसल धान के लिए उपयोग में लायी जाएंगी। इन दो आविष्कारों को पेश किए जाने से भारत के राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम को समर्थन मिलेगा। ये समाधान धान के किसानों को अपनी धान की पैदावार को शानदार तरीके से बढ़ाने में मदद करेंगे, क्योंकि ये धान के प्रमुख कीटों धान के भूरा माहु की रोकथाम करेंगे तथा आवरित झुलसा जैसी बीमारियों से धान की रक्षा करेंगे। भारत 100 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक सालाना उत्पादन के साथ दुनिया में धान का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है, जो कि धान के विश्वव्यापी व्यापार में लगभग 40 प्रतिशत का योगदान देता है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव ने भारत के धान के किसानों को बुरी तरह प्रभावित किया है। प्रतिकूल मौसम दशाओं का परिणाम बाढ़ों, बीमारियों और भूरा माहु की बड़ी आबादी के रूप में सामने आया है जिससे धान की पैदावार तथा क्वॉलिटी दोनों ही घटी है। वेलेक्सियोTM बीएएसएफ का नवीनतम कीटनाशक है जो अपनी एक अलग उल्लेखनीय पहचान, केवल एशिया पैसिफिक के धान के किसानों के बीच ही नहीं बना रहा है, बल्कि यह पूरे क्षेत्र में धान फसल तंत्र के प्रति अपनी एक दीर्घकालीन प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। बीएएसएफ एग्रीकल्चरल सॉल्यूशन्स के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, ग्लोबल स्ट्रेटेजिक मार्केटिंग एंड सस्टेनेबिलिटी, मार्को ग्रो' डानोविक का कहना है हम भारत में सबसे पहले इसे लॉन्च कर पाने के साथ अत्यंत उत्साहित हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि धान के किसानों को इस वक्त कीटों की रोकथाम में मदद के लिए एक नई केमिस्ट्री की बहुत जरूरत है। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए वे कहते हैं सक्रिय तत्व की मार्केट स्टैण्डर्ड्स के साथ काई क्रॉस-प्रतिरोधकता ज्ञात नहीं है तथा यह धान के भूरा माहु की चार प्रजातियों की जीवन की नुकसान पहुंचाने वाली सभी अवस्थाओं में बेहतरीन प्रभावशीलता था दीर्घकालीन अवशेषी रोकथाम दिलाता है।

अदामा इंडिया का नया उत्पाद अपटर्न लांच

इंदौर। भारत की सुप्रसिद्ध मल्टीनेशनल कंपनी अदामा इंडिया प्रा.लि. का विक्रेता/वितरक सम्मेलन विगत दिवस आयोजित किया गया। इस अवसर पर एग्रीकल्चर प्रेसवार्ता भी की गई। इस अवसर पर कंपनी की डिस्ट्रीब्यूटर मीटिंग में कंपनी के मध्यप्रदेश के जनरल मैनेजर श्री अजय गुप्ता ने सभी आगंतुकों एवं डीलर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स का स्वागत किया। कम्पनी के सेल्स डायरेक्टर श्री रमेश रेड्डी, बिजनेस हेड वेस्ट श्री प्रमोद सूर्यवंशी, मध्यप्रदेश के जनरल मैनेजर श्री अजय गुप्ता, प्रोडक्ट्स मैनेजर विडीसाइड्स श्री अशोक मुड्डा, पश्चिम मध्यप्रदेश के मालवा रीजन के मैनेजर श्री राकेश द्विवेदी, इंदौर रीजन के रीजनल मैनेजर श्री अन्नत धुर्वे, निमाड़ रीजन के रीजनल मैनेजर श्री झंवर पटेल, मार्केट डेवलपमेंट मैनेजर एवं अदामा परिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम में श्री रमेश रेड्डी ने कंपनी की सम्पूर्ण जानकारी एवं चैनल पार्टनर स्ट्रेटजी की जानकारी दी। उन्होंने इन्फील्ट्रेशन रोकने की लिये विभिन्न कठोर कदम उठाने का आश्वासन दिया।

श्री प्रमोद सूर्यवंशी ने कम्पनी का सम्पूर्ण सिनेरियो व्यक्त किया। इस अवसर पर नया उत्पाद अपटर्न लांचिंग किया गया। इसे इसी साल फरवरी, मार्च, अप्रैल 2025 में मूंग में ट्रायल किया गया था। अपटर्न के बारे में बहुत सारे विक्रेताओं ने अपने-अपने एरिया की रिपोर्ट को अच्छा बताया। श्री आशीष जैन ने अपटर्न का टेक्निकल प्रजेन्टेशन एवं इसके बारे में किसानों को बताया। कार्यक्रम में लगभग 375 विक्रेताओं ने भाग लिया। सभी लोगों ने अपटर्न अच्छी मात्रा में बेचने का आश्वासन दिया। श्री राजेश द्विवेदी ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

पारादीप एवं जुआरी का विक्रेता सम्मेलन आयोजित

छिंदवाड़ा। पारादीप फॉस्फेट्स और जुआरी फार्महब लिमिटेड ने आगामी खरीफ सीजन के लिए उर्वरक व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित करते हुए छिंदवाड़ा में विक्रेता सम्मेलन का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में कंपनी के उर्वरकों के उपयोग और उपलब्धता पर चर्चा की गई, साथ ही मिट्टी के स्वास्थ्य और जैविक कार्बन के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम में कंपनी के जैविक उत्पादों और स्मार्ट सॉल्यूशन्स के वीडियो प्रशंसा पत्र प्रदर्शित किए गए। टीएसपी, 20:20:0:13, जय किसान नैनो डीएपी और नाइट्रोनिक-32 प्रतिशत जैसे उत्पादों के परिणामों पर विस्तार से चर्चा की गई। इसके अलावा, एसपीएन उत्पादों जैसे जाइपीमाइट, बायो 20, रिस्टोर-1 और 2, 3X, कैलमैक्स, जिंक 39.5, नवरत्ना पावर जायम और गंधक 90 पर भी विक्रेताओं का मार्गदर्शन किया गया। इस अवसर पर नाइट्रोनिक के लॉन्च की घोषणा की गई और भौगोलिक स्थिति तथा विभिन्न रेक पॉइंट्स पर विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर पारादीप फॉस्फेट्स और जुआरी फार्महब लिमिटेड के डॉ. अजीत कुमार राणा (रीजनल हेड), सरोज कुमार सिंह (चीफ मैनेजर), मनीष शर्मा (डिप्टी मैनेजर), अनिकेत काले (ऑफिसर) और जिले के प्रमुख विक्रेताओं में आराध्य जैन, पराग जैन और अमित चांडक उपस्थित थे।

- डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह
  वरिष्ठ तकनीकि अधिकारी (पशुपालन)
- डॉ. मनोज कुमार अहिरवार
- श्री बी.एल. साहू
- डॉ. राजेश कुमार द्विवेदी
- श्री राजेश खवसे

कृषि विज्ञान केन्द्र, दमोह (म.प्र.)

भारत वर्ष कृषि प्रधान देश है, कृषि व पशुपालन दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। पशु रोगों से पशु को बचाना हमारा कर्तव्य हो जाता है। चूंकि रोगों से पशुओं की उत्पादन व प्रजनन क्षमता कम हो जाती है अतः पशुओं को इन रोगों से बचाना अति आवश्यक है और उसका प्रमुख उपाय है- टीकाकरण।

गौपशुओं में प्रमुख संक्रामक रोग एवं उनकी रोकथाम

टीकाकरण से लाभ: सर्वप्रथम तो यह कि पशु रोगग्रस्त हो जाता है व पशुपालक को उपचार में होने वाले आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ता है। कभी कभी पशु में रोगवस्था के दौरान ही कई प्रकार के विकार जैसे उत्पादन व शारीरिक क्षमता में कमी, लंगड़ापन, श्वास रोग, गर्भपात आदि उत्पन्न हो जाया करते हैं। अत: पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि नियमित व उचित समय परनिम्न रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण करवायें ।

छड़ रोग (एन्थ्रेक्स): इस बीमारी के प्रमुख लक्षण है तीव्र ज्वर, श्वास लेने में तकलीफ, पेट दर्द, भोजन से अरूचि, खून के दस्त, एवं मुंह, नाक तथा गुदा से गाढ़ा, न जमने वाला, कालापन लिए रक्त-स्त्राव का होना। पशु की मृत्यु 1-2 घंटे से 3-4 दिन में होती है। यह रोग बीमार पशुओं से मनुष्यों को भी हो सकता है।

रोग से बचाव: पशुओं का नियमित टीकाकरण

- एन्थ्रेक्स स्पोर वेक्सीन 3 माह से उपर के पशुओं में 1 मिली प्राति वर्ष लगाना चाहिये।
- रोगग्रस्त पशु को अलग बांधें तथा इसका इलाज करते वक्त दस्तानेए मास्क इत्यादि पहने।
- मृत्यु होने की दशा में पोस्ट-मार्टम नहीं करें। पशु के मृत शरीर को जला देवें अथवा गहरा गाड़ने के पश्चात् चूने की परत डाल दें ।
- जानवर बांधने की जगह तथा उसके संपर्क में आई समस्त वस्तुओं का निर्जन्तुकरण।
- पशु उत्पादों का निर्जन्तुकरण।

क्षय रोग (ट्यूबरकुलोसिस): यह मनुष्यों व जानवरों में होने वाली एक छूत की बीमारी है। इसकी गठानें शरीर के किसी भी अंग में हो सकती हैं। यह रोग जानवरों से मनुष्यों में भी हो सकता है। इस बीमारी के लक्षण जानवरों में बाहर से पूर्णत: प्रदर्शित नहीं होते हैं। कुछ दिनों बाद जानवर कमजोर दिखने लगता है। चारा खाना बंद कर देता है। कभी बुखार तेज तो कभी कम हो जाता है। जानवर सुस्त व आलसी हो जाता है, परंतु उसकी आंखें चकमदार व जागरूक ही होती है। यदि गठानें फेफड़ों में बनती है तो जानवर को खांसी आती है। यदि जानवर थोड़ी सी भी मेहनत करे तो हांफने व खाँसने लगता है। जानवरों में गर्भाधान नहीं हो पाता है, थनों में सूजन आ जाती है तथा दूध सामान्य नहीं होता है। गर्भित जानवर से बीमारी बछड़े को भी हो सकती है। इस रोग से ग्रसित पशु का दूध पीने लायक नहीं होता है। रोग की रोकथाम के लिये बीमार जानवर को बाकी स्वस्थ्य जानवरों से दूर रखना चाहिये। जानवरों की एवं उनके आसपास के स्थान की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये।

गलघोंटू (एच.एस./घटसर्प) यह वर्षा ऋतु में होने वाला प्रमुख रोग है, जानवर पर काम का बोझ ज्यादा पड़ता है या जानवर भूखा रहता है तथा इस मौसम में उत्पन्न नये हरे चारे के तन्तुओं जिसमें इस रोग के जीवाणु रहते हैं उन्हें पशु खा लेता है एवं बीमार हो जाता है। इसमें एक या दो दिन में ही पशु को तेज बुखार, भूख न लगना, आलस्य जोर-जोर से सांस चलना, मुंह से लार आना और आंखों में सूजन आना प्रमुख लक्षण है। आंखें लाल भी हो जाती हैं पशु के गले एवं छाती बाहर निकल जाती है। जो कि बहुत ज्यादा तकलीफ दायक होती है। जीभ ठीक से नहीं ले पाता है और गले से घर्र-घर्र की आवाज आती है जोकि लगभग 100 फीट दूरी से भी सुनाई देती है। जानवर की कुछ घंटों में ही मृत्यु हो जाती है। गलघोंटू से बचाव हेतु पशुओं का प्रत्येक वर्ष टीकाकरण करवाना चाहिये । घटसर्प तेल मिश्रित टीका (एच.एस. ऑयल एडज्यूवेंट वेक्सीन) मात्रा 135 किलो तक शारीरिक भार वाले पशुओं में 2 मिली तथा उससे अधिक शारीरिक भार वालों में 3 मिली अंतर्मांसपेशिय में प्रति वर्ष लगाना चाहियें। घटसर्प फिटकरी मिश्रित टीका (एच.एस.एल. प्रिसिपिटेटेड वेक्सीन) मात्रा-बड़े पशुओं में 10 मिली तथा छोटे पशुओं में 5 मिली अंतत्वचा में प्रति छ: माह में लगाया जाता है। पशुओं को बारिश, तेज ठंड से बचाना चाहिये। गलगोंद का संक्रमण रोकने हेतु रोगग्रस्त पशुओं एवं उनके संपर्क में आई समस्त वस्तुओं को अलग रखना चाहिये ।

गर्भपात: इस बीमारी में पशुओं में गर्भपात होने से दूध का उत्पादन कम होने व नपुंकसता आने के कारण पशुपालकों को आर्थिक नुकसान बहुत ज्यादा होता है। यह बीमारी जानवरों से मनुष्यों में भी होती है। इस बीमारी में मादा पशुओं का गर्भावस्था के 8-9 महीने में गर्भपात हो जाता है। नर पशुओं में नपुंकसता हो जाती है। यह नर पशुओं से मादा पशुओं में लैंगिंक संपर्क से फैलता है। जो मादा पशु गर्भधारण नहीं करते हैं उनके थनों में सूजन आ जाती है। यह बीमारी एक साथ कई जानवरों को हो जाती है। इसलिये प्रत्येक पशु की जांच कराना जरूरी है। जानवर के गर्भाशय में सूजन आ जाती है और जड़ (पासेण्टा) में मवाद पड़ जाता है व गर्भाशय से दुर्गंधयुक्त स्त्राव निकलता है। उक्त रोगों की रोकथाम हेतु पशुपालकों को उनके पशुओं के दूध एवं खून की जांच समय में करवाना चाहिये। गर्भवती गाय को प्रसव तक अन्य पशुओं से अलग रखना चाहिये। सभी पशुओं को विभिन्न रोगों से बचाव हेतु पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार टीकाकरण अवश्य कराना चाहिये।

खुरपका एवं मुँहपका (फुट एण्ड माउथ डिसिज): खुरधारी जानवरों में होने वाला यह विषाणु जनित रोग बीमार पशु से स्वस्थ पशुओं में रोगग्रस्त पशुओं अथवा उनके घाव से रिसने वाले पदार्थ के संपर्क में आने से तेजी से फैलता है। इसके प्रमुख लक्षणों में मुंह से अत्यधिक लार का टपकना, तेज बुखार, चारा-पानी नहीं लेना तथा मुंह, जीव्हा, थन, पैर एवं खुरों में छालें, लंगड़ापन, कमजोरी एवं मृत्यु है। यह रोग मनुष्यों में भी संक्रमण कर सकता है।

रोग से बचाव

- रोगग्रस्त पशु को अलग बांधें एवं उसके समीप न जायें।
- जानवरों के बांधने की जगह तथा उनके काम में आने वाली समस्त वस्तुओं का निर्जन्तुकरण करें।
- प्रत्येक वर्ष पशुओं को टीका लगवाएँ। एफ.एम.डी. वेक्सीन (इंटरवेट) गी पशुओं में 10 मिली व भेड़ बकरी में 5 मिली अंतरत्वचा में सर्वप्रथम 3 महीने की आयु में तत्पश्चात् 6 महीने के बाद एवं फिर प्रतिवर्ष लगाना चाहिये।

एफ.एम.डी. वेक्सीन: उपरोक्त निर्देशानुसार ही लगाया जाता है। रक्षा एफ.एम.डी. वेक्सीन गौ पशु में 3 मिली तथा भेड़-बकरी में 1 मिली प्रति छ: माह में अंतरत्वचा में लगाना चाहिये। कोवैक्स (टेट्रावेलेंट) ऑयल एडज्यूवेंट एफ.एम.डी. वेक्सीन गौ पशु तथा भेड़ बकरी आदि में 3 मिली अंतर्मांसपेशीय या अंर्तत्वचा में प्रति वर्ष लगाना चाहिये।

एकटंगिया (बी.क्यू.): यह रोग बछडे एवं पाड़े-पाड़ियों मे विशेषत: बारिश के मौसम में होता है। इस रोग में पशु को तेज ज्वरए चलने में तकलीफ एवं पुट्ठों पर सूजनए दबाने में दर्द एवं फर्र-फर्र की आवाज महसूस होती है। यह रोग विशेषत: स्वस्थ वत्सों में होता है। सामयिक व उचित इलाज न मिलने की दशा में जानवर की मृत्यु हो जाती है। एक टंगिया से बचाव हेतु मानसून पूर्व जानवरों का टीकाकरण अवश्य करवाना चाहिये। बी.क्यू. वेक्सीन तीन माह से तीन वर्ष की आयु के गौ पशु में 5 मिली व भेड़-बकरी में 3 मिली अंतरत्वचा में प्रति वर्ष लगाना चाहिये। उपरोक्त सभी टीके मप्र में जैविक उत्पाद संस्थान महू में बनाये जाते हैं तथा समस्त शासकीय पशु चिकित्सालयों में प्रदाय किये जाते हैं। ये टीके वर्षा ऋतु के प्रारम्भ होने से पूर्व याने मई अंत/जून के प्रथम सप्ताह में लगाये जाते हैं। किसी भी प्रकार की चोट का तुरंत उपचार करवायें और उस पर एन्टीसेप्टिक दवा लगाए। इस हेतु पेनिसिलिन के इंजेक्शन अर्न्तमांसपेशीय मार्ग द्वारा लगाना लाभकारी होता है।

(पृष्ठ 7 का शेष) **खीरा की खेती......**

एपीलैकना बीटल: इस कीट के वयस्क और लार्वा दोनों पौधे की पत्तियों और कोमल भागों को बहुत तेजी से खाते हैं, जिससे पत्तियों पर जाली जैसी संरचना बन जाती है और पत्तियाँ कंकाल जैसी दिखने लगती हैं। बाद में ये पत्तियां सूख जाती हैं। इस कीट के प्रबंधन के लिए फसल पर एंडोसल्फान को 2 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। **खस्ता फफूंदी:** इसके लक्षण सबसे पहले पत्तियों की निचली सतह पर सफेद गोल धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। जब संक्रमण बढ़ता है तो ये धब्बे आपस में मिलकर पूरी पत्ती की दोनों सतहों को ढँक लेते हैं जिससे पत्तियां झड़ने लगती हैं। रोगग्रस्त पौधों के फल छोटे रह जाते हैं और पूरी तरह विकसित नहीं हो पाते। इस रोग को नियंत्रित करने के लिए गंधक (सल्फर) का छिड़काव या धूल छिड़कना अथवा कराथेन का 2 मिली प्रति लीटर की दर से पानीमें मिलाकर छिड़काव करना प्रभावी उपाय है।

डाउनीफफूंदी: यह रोग फफूंद स्यूडोपेरोनोस्पोरा क्यूबेंसिस के कारण होता है। यह उच्च आर्द्रता वाले क्षेत्रों में प्रचलित है, खासकर जब गर्मियों में नियमित रूप से बारिश होती है। इस रोग की विशेषता पत्तियों की ऊपरी सतह पर पीले, कोणीय धब्बे बनना है। रोग तेजी से फैलता है और तेज पत्तों के झड़ने के कारण पौधे को जल्दी मार देता है। इस कीट को नियंत्रित करने में सप्ताह में एक बार डाइथेन एम-45 जैसे कवकनाशी स्प्रे का प्रयोग प्रभावी है।

खीरे की मोजेक विषाणु बीमारी: यह रोग एफिड नामक कीट द्वारा फैलता है। इस बीमारी में पत्तियों पर धब्बेदार (मोटल्ड) पैटर्न और खुरदरी सतह दिखाई देती है। गंभीर मामलों में पौधे पीले पड़ जाते हैं, बौने रह जाते हैं और उनमें बहुत कम या बिल्कुल भी फल नहीं लगते। इस रोग की रोकथाम के लिए फसल चक्र अपनाना, जिसमें गैर-कुकुर्बिटेसी फसलों विशेष रूप से कोल क्रॉप्स (जैसे पत्तागोभी, फूलगोभी) को शामिल करना। रोग फैलाने वाले कीटों (एफिड्स) को नियंत्रित करने के लिए रॉगरकी 1 मिली लीटर मात्रा को 1 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करना।

एलोवेरा के लाभ, मार्केटिंग एवं प्रसंस्करण प्रक्रिया

- संदीप कुमार शर्मा
- डॉ. संजय सिंह
- डॉ. अजय कुमार पाण्डेय

कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.) जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

एलोवेरा जूस के प्रमुख फायदे

पाचन में सुधार: एलोवेरा जूस पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है और कब्ज, एसिडिटी, और पेट दर्द जैसी समस्याओं को कम करने में मदद करता है। यह आंतों की सफाई में भी मदद करता है।

वजन घटाने में सहायक: एलोवेरा जूस पीने से मेटाबॉलिज्म तेज होता है और शरीर से अतिरिक्त वसा कम होती है।

त्वचा और बालों के लिए फायदेमंद: एलोवेरा जूस त्वचा को निखारता है, हाइड्रेटेड रखता है और झुर्रियों को कम करता है। यह बालों की बृद्धि में भी मदद करता है।

मधुमेह में लाभकारी: एलोवेरा जूस ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है।

प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है: एलोवेरा जूस में एंटी-ऑक्सीडेंट और एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं जो प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में मदद करते हैं।

हृदय स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद: एलोवेरा जूस शरीर में कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स के स्तर को नियंत्रित रखने में मददगार होता है, जिससे हृदय संबंधी रोग का खतरा कम रहता है।

मासिक धर्म की समस्याएं: महिलाओं में मासिक धर्म की अनियमितता और दर्द को कम करने में एलोवेरा जूस सहायक हो सकता है।

डिटॉक्सिफिकेशन: एलोवेरा जूस शरीर को डिटॉक्स करने में मदद करता है, जिससे विषाक्त पदार्थों का शरीर से निकल जाता है।

एलोवेरा जूस का सेवन

- एलोवेरा जूस को सुबह खाली पेट पीने से सबसे अधिक लाभ मिलता है।
- आप एलोवेरा जूस को सीधे या फलों के जूस में मिलाकर पी सकते हैं।
- यदि आपको बिना चीनी वाला एलोवेरा जूस पीना मुश्किल लगता है, तो आप इसे पानी में मिलाकर पी सकते हैं।
- एलोवेरा जूस को दिन में तीन बार 30 मिलीलीटर तक सीमित रखने से स्वास्थ्य लाभ मिल सकता है और संभावित दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है।
- गर्भावस्था के दौरान एलोवेरा जूस का सेवन बिना डॉक्टर की सलाह के नहीं करना चाहिए।

सावधानियां

- जो लोग ब्लड प्रेशर या हार्ट से जुड़ी समस्याओं या खून पतला करने वाली दवाएं लेते हैं, उन्हें एलोवेरा के जूस का सेवन करने से परहेज करना चाहिए।
- यदि आपको एलोवेरा से एलर्जी है, तो आपको इसका सेवन नहीं करना चाहिए।
- यदि आप किसी भी दवा का सेवन कर रहे हैं, तो एलोवेरा जूस का सेवन करने से पहले अपने डॉक्टर से सलाह लें।

एलोवेरा की मार्केटिंग के तरीके

ऑनलाइन मार्केटिंग

ई-कॉमर्स वेबसाइट: आप अपनी खुद की ई-कॉमर्स वेबसाइट बना सकते हैं या फिर बड़े ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म जैसे अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि पर अपना स्टोर खोल सकते हैं।

सोशल मीडिया: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर आदि पर एलोवेरा के उत्पादों की जानकारी और प्रचार कर सकते हैं।

वेबसाइट और ब्लॉग: आप अपनी खुद की वेबसाइट या ब्लॉग बना सकते हैं और एलोवेरा के फायदों, उपयोगों और खेती के बारे में जानकारी दे सकते हैं।

ऑनलाइन विज्ञापन: आप सोशल मीडिया और सर्च इंजन पर विज्ञापन चला सकते हैं।

ऑफलाइन मार्केटिंग

स्थानीय बाजार: आप अपने स्थानीय बाजार में एलोवेरा के उत्पादों को बेच सकते हैं।

कृषि मेलों और प्रदर्शनियों: कृषि मेलों और प्रदर्शनियों में अपने उत्पादों को प्रदर्शित कर सकते हैं।

साझेदारी: आप अन्य व्यवसायों के साथ साझेदारी कर सकते हैं, जैसे कि आयुर्वेदिक दुकानें, सौंदर्य प्रसाधन दुकानें, आदि।

मुफ्त नमूने: आप अपने उत्पादों के मुफ्त नमूने देकर ग्राहकों को आकर्षित कर सकते हैं।

एलोवेरा की मार्केटिंग के लिए कुछ अतिरिक्त सुझाव

गुणवत्ता पर ध्यान दें: अपने उत्पादों की गुणवत्ता पर ध्यान दें। उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद ग्राहकों को आकर्षित करेंगे और वे आपके उत्पादों को फिर से खरीदने की संभावना होगी।

ग्राहक सेवा: अच्छी ग्राहक सेवा प्रदान करें। ग्राहकों को उनकी समस्याओं का समाधान करने में मदद करें और उनके सवालों के जवाब दें।

प्रचार और विज्ञापन: अपने उत्पादों का प्रचार और विज्ञापन करें ताकि अधिक से अधिक लोगों को उनके बारे में पता चले।

प्रतिक्रिया लें: अपने ग्राहकों से अपने उत्पादों के बारे में प्रतिक्रिया लें और उन्हें बेहतर बनाने के लिए उनका उपयोग करें।

सरकारी योजनाओं का लाभ उठाएं: सरकार द्वारा कृषि और ग्रामीण विकास के लिए कई योजनाएं चलाई जाती हैं। इन योजनाओं का लाभ उठा सकते हैं।

एलोवेरा की खेती से उबम लाभ अवसर

एलोवेरा के पौधे बेचकर: आप एलोवेरा के पौधे बेचकर भी कमाई कर सकते हैं।

एलोवेरा का जेल बेचकर: आप एलोवेरा का जेल निकालकर बेच सकते हैं।

एलोवेरा जूस बेचकर: आप एलोवेरा का जूस बनाकर बेच सकते हैं।

एलोवेरा से बने उत्पादों का निर्माण करके: आप एलोवेरा से बने विभिन्न उत्पादों जैसे कि क्रीम, साबुन, शैम्पू आदि का निर्माण करके बेच सकते हैं।

वर्तमान समय में कई निजी कम्पनियां एवं आयुर्वेदिक दवा निर्माता जैसे पतंजलि, डाबर आदि कांट्रैक्ट फार्मिंग में किसानों को उत्तम लाभ व विपणन सुविधा प्रदान कर रही हैं।

एलोवेरा प्रसंस्करण: एलोवेरा प्रसंस्करण में, एलोवेरा के पत्तों से जेल या जूस निकाला जाता है, जो विभिन्न उत्पादों में उपयोग होता है, जैसे कि सौंदर्य प्रसाधन और दवाएं। यह प्रक्रिया धोना, छीलना, जेल निकालना, और फिर ब्लेंडिंग, गर्म करना, छानना, ठंडा करना और सुरक्षित करना शामिल है।

एलोवेरा प्रसंस्करण की प्रक्रिया

धोना और छीलना: एलोवेरा के पत्तों को धोया जाता है, फिर छिलका हटा दिया जाता है।

जेल निकालना: छिलका हटाने के बाद, जेल को सावधानी से निकाला जाता है.

ब्लेंडिंग और गर्म करना: जेल को ब्लेंडर में डाला जाता है और फिर गर्म किया जाता है।

छानना: गर्म किए गए जेल को छानकर जूस बनाया जाता है।

ठंडा करना और सुरक्षित करना: जूस को ठंडा करके और फिर इसमें सुरक्षित करने वाला पदार्थ मिलाया जाता है।

एलोवेरा प्रसंस्करण के लाभ

आय में वृद्धि: एलोवेरा की खेती से किसानों की आय बढ़ सकती है, खासकर जब वे खुद का प्रसंस्करण यूनिट लगाते हैं।

विभिन्न उत्पाद: एलोवेरा प्रसंस्करण के बाद, विभिन्न उत्पादों जैसे कि जूस, जेल, पाउडर, और क्रीम बनाई जा सकती हैं।

स्वास्थ्य लाभ: एलोवेरा जूस और जेल में कई स्वास्थ्य लाभ होते हैं, जैसे कि त्वचा और बालों के लिए फायदेमंद, और पाचन में सुधार।

एलोवेरा का उपयोग प्राकृतिक कॉस्मेटिक उत्पादों को तैयार करने के लिए किया जाता है। दवा उद्योग में एलोवेरा का उपयोग मलहम जैसे उत्पादों के निर्माण और क्रीम, साबुन आदि जैसे कॉस्मेटिक उत्पादों को तैयार करने के लिए किया जाता है।

एलोवेरा प्रसंस्करण में एलोवेरा की पत्ती और अन्य घटकों के रस को मिश्रित करना, पीसना और गर्म करना शामिल है, जिससे कई उत्पाद बनते हैं। निकाले गए रस को अन्य पदार्थों के साथ मिलाकर दवा, कॉस्मेटिक उत्पाद बनाए जाते हैं।

हालांकि, छोटे पैमाने पर कम लागत वाली एकल इकाई जो सभी कार्यों को जोड़ती है, स्थानीय स्तर पर आसानी से उपलब्ध नहीं है। इसलिए सभी प्रक्रियाओं को एक ही इकाई में निष्पादित करने और कठिनाइयों को दूर करने के लिए आरयूटीएजी आईआईटी रुड़की ने एलोवेरा प्रसंस्करण मशीन को डिजाइन और विकसित किया है।

प्राकृतिक कॉस्मेटिक उत्पादों के लिए एलोवेरा प्रसंस्करण मशीन की मुख्य विशेषता

क्रीम/इमल्शन बनाने वाली इकाई जो एलोवेरा पल्प और अन्य उत्पादों को पीसने, मिश्रित करने और गर्म करने के सभी कार्यों को एक ही इकाई में प्रक्रिया के दौरान सभी महत्वपूर्ण मापदंडों को नियंत्रित करते हुए सुगम बना सकती है।

सौंदर्य प्रसाधन (मॉइश्चराइजर/क्रीम, शैंपू और लोशन) जूस/पेय पदार्थ आदि जैसे विभिन्न उत्पादों के पायसीकरण/उत्पादन के लिए इकाई का अनुकूलन। कम उपयोग किए जाने वाले प्राकृतिक पौधों और अन्य उपयोगी सामग्रियों का उपयोग।

प्रसार क्षमता: एलोवेरा की खेती करने वाले स्थानीय सीमांत किसान और छोटे उद्यमी, एनजीओ आदि।

इकाई की अनुमानित लागत: रु. 30,000।

विकसित कृषि संकल्प अभियान का शुभारंभ

रीवा। कृषि विज्ञान केन्द्र रीवा में जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल मुख्य अतिथि, अधिष्ठाता डॉ. एस.के. त्रिपाठी, कृषि महाविद्यालय, केवीके प्रमुख डॉ. ए.के. पांडेय एवं उप संचालक कृषि रीवा यू.पी. बागरी ने हरी झंडी दिखाकर कृषि तकनीकी दल को रवाना किया। जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के अटारी जबलपुर द्वारा जिले के विभिन्न ब्लाकों के लिए कलेक्टर रीवा एवं उप संचालक कृषि रीवा के समन्वय से 9 टीम गठित की गई है। जिसमें कृषि महाविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं प्राध्यापकों द्वारा कृषि में विकसित नए-नए नवाचारों एवं नई तकनीकों के साथ-साथ जिले के विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं के विषय में अगले 15 दिनों 29 मई से 12 जून तक रीवा एवं मऊगंज जिले के विभिन्न गांवों में कृषकों को जानकारी दी जाएगी।

इस अवसर पर सहायक संचालक कृषि डॉ. बी.पी. सिंह और टीम लीडर डॉ. के.सी. सिंह, डॉ. अखिलेश कुमार, डॉ. सी.जे. सिंह, डॉ. राजेश सिंह के साथ टीम के वैज्ञानिक सदस्य मौजूद थे।

ग्रामीण युवाओं को डेयरी पालन पर व्यावसायिक प्रशिक्षण

दतिया। कृषि विज्ञान केन्द्र दतिया द्वारा जिले में व्यावसायिक डेयरी पालन विषय पर पांच दिवसीय स्वरोजगार प्रशिक्षण केन्द्र प्रमुख अवधेश सिंह के मार्गदर्शन एवं पशु चिकित्सा वैज्ञानिक डॉ. रूपेश जैन के तकनीकी निर्देशन में संपन्न हुआ। प्रशिक्षण में केन्द्र प्रमुख द्वारा पशुपालकों को समन्वित कृषि पद्धति में पशुपालन के महत्व को समझाया गया। तकनीकी सत्र में डॉ. रूपेश जैन द्वारा पशुपालकों को दुधारू पशुओं में दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हेतु संतुलित पशु आहार बनाने की विधि बताई गई। परम्परागत हरे चारे के साथ-साथ अजोला हरा चारा उत्पादन तकनीक, हाइड्रोपोनिक हरा चारा उत्पादन तकनीकी, पशु चाट उत्पादन तकनीक एवं यूरिया द्वारा सूखा भूसे के उपचार की तकनीकियों को विशेष रूप से बताया गया। डॉ. जैन ने बताया कि उक्त तकनीकियों द्वारा किसान अपने यहां 15-20 प्रतिशत तक दुग्ध उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं।

डॉ. जैन ने दुधारू पशुओं को बीमारियों के प्रबंधन के बारे में बताते हुये कहा कि पशुओं को समय से गलघोटू एवं खुरपका, मुंहपका रोग के टीके लगवाना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि दुधारू पशुओं को नियमित अंतराल पर हर तीन महीने में एक बार पेट के कृमियों को नष्ट करने हेतु कृमीनाशक दवा एलबेंडाजोल 3 ग्राम प्रति पशु के हिसाब से पशुओं को आवश्यक रूप से देना चाहिये। साथ ही पशुओं को किलनी एवं गोचड़ी से बचाव हेतु सायपर मेथ्रिन अथवा फ्लूमैथ्रिन दवा 3-4 मिली एक लीटर पानी में घोल बनाकर पशुओं के शरीर पर लगाना चाहिये। पशु चिकित्सा विभाग के वरिष्ठ पशु चिकित्सक डॉ. अविनाश गुप्ता ने बताया कि पशुओं में खनिज पोषक तत्वों की कमी को पूरा करने के लिये 40-50 ग्राम खनिज लवण मिश्रण प्रतिदिन प्रति पशु की दर से दूध वाले पशुओं को देना चाहिये। इससे न केवल पशुओं की प्रजनन क्षमता में वृद्धि होती है अपितु दूध उत्पादन में भी वृद्धि होती है साथ ही गुणवत्ता भी बेहतर होती है। उन्होंने पशुपालन विभाग से संचालित योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। प्रशिक्षण में जिले के 22 ग्रामों के लगभग 31 पशुपालक कृषकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण में डॉ. रूपेश जैन एवं डॉ. जी. दास उप संचालक पशुपालन द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये।

युवाओं को रोजगार के लिये प्रेरित करेगा जवाहर फूड मॉडलः डॉ. मिश्रा

जबलपुर। जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के द्वितीय जवाहर फूड आउटलेट का भव्य उद्घाटन कुलपति प्रो. प्रमोद कुमार मिश्रा के मुख्य आतिथ्य एवं संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जी.के कौतू की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। डॉ. मिश्रा ने अपने उद्बोधन में कहा कि खाद्य विज्ञान विभाग की यह अनूठी और अद्वितीय पहल जहां एक ओर विश्वविद्यालय को आर्थिक एवं तकनीकी आधार देगी वहीं दूसरी ओर युवाओं के लिये रोजगार हेतु एक मॉडल के रुप में प्रेरणा भी देगी।

डॉ. कौतू ने बताया कि खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग का यह मॉडल अनुसंधान की दिशा में एक नया कदम है। विभाग द्वारा विभिन्न प्रकार के उत्पादों को विधिवत प्रोटोकॉल बनाकर तैयार किया जाता है। इन उत्पादों को जवाहर फूड आउटलेट के माध्यम से जनमानस तक विक्रय द्वारा पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया जायेगा। खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस. एस. शुक्ला ने बताया कि विभाग द्वारा श्रीअन्न संवर्धित खाद्य उत्पाद जैसे- कोदो चावल, कुटकी चावल, सांवा चावल, रागी आटा, मल्टीग्रेन आटा, ज्वार पास्ता, रागी पास्ता, ज्वार बिस्किट, बाजरा बिस्किट, मल्टीग्रेन आटाब्रेड, मल्टीग्रेन माफिंस एवं टोस्ट तैयार करके जवाहर फूड आउटलेट पर विक्रय हेतु उपलब्ध कराये जायेंगे। इस अवसर कुलपति डॉ. मिश्रा द्वारा क्षय रोगियो को पोषण आहार के रुप में श्रीअन्न से बने उत्पादों की टोकरी भी वितरित की गई। कार्यक्रम में संचालक प्रक्षेत्र डॉ. अनिता बब्बर, कुलसचिव डॉ.ए.के. जैन, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. अमित शर्मा, डायरेक्टर डॉ. आनंद विश्वकर्मा, डॉ. विजय कुमार यादव, डॉ. पी.के.सिंह,, डॉ. बी.के. दीक्षित, डॉ. अर्चना पांडे, डॉ. अल्पना सिंह, डॉ. अनुभा उपाध्याय, सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी डॉ. बी.एस. द्विवेदी एवं विश्वविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में छात्र उपस्थित रहे।

विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम आयोजित

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ में विकसित कृषि संकल्प अभियान की जिला स्तरीय कार्यक्रम की एक दिवसीय बैठक की गयी। यह राष्ट्रव्यापी अभियान 29 मई से 12 जून 2025 तक चलाया जाएगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छत्रपाल सिंह बुंदेला ने किसानों से आवाहन किया कि वैज्ञानिक के द्वारा अनुसंधान केंद्र किसान के द्वार पहुंच रहा है, उनसे संवाद कर उन्नत तकनीक का लाभ उठायें। विशिष्ट अतिथि अनुराग वर्मा द्वारा कहा गया कि किसान इस कार्यक्रम का अधिक से अधिक लाभ उठाएं और समन्वित कृषि पद्धति अपनायें तथा प्राकृतिक खेती के लाभ को समझें और उसे अपनायें। अभय यादव द्वारा किसानों से आग्रह किया गया कि किसान कल्याण योजनाओं और उन्नत तकनीक का लाभ उठाकर लाभकारी खेती करें तथा मृदा का प्रशिक्षण आवश्यक करायें। डॉ. डी.एस. तोमर ने विकसित कृषि संकल्प अभियान का महत्व बताया। डॉ. बी.एस. किरार द्वारा बताया गया कि विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के माध्यम से हुई, जो पूरे देश में चलाया जा रहा है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य दलहनी एवं तिलहनी फसलों के क्षेत्रफल में वृद्धि, जिले की प्रमुख फसलों के उत्पादन में वृद्धि, शासकीय योजनाओं की जानकारी, प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूकता,मृदा स्वास्थ्य कार्ड की जानकारी, प्रधान प्रधानमंत्री सिंचाई योजनाओं की जानकारी, श्रीअन्न फसलों के क्षेत्रफल में वृद्धि लाना आदि है। इस अभियान के तहत कृषि रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। कार्यक्रम का संचालन के.पी. अहिरवार कृषि विस्तार अधिकारी द्वारा किया गया।

विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम का शुभारंभ

बैतूल। केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की द्वारा चलाये जाने वाले विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि डी.डी. उइके, केन्द्रीय-राज्य मंत्री (जनजातीय मामले), के साथ विशिष्ट अतिथि मोहन नागर, उपाध्यक्ष म.प्र. जनअभियान परिषद् एवं अन्य जनप्रतिनिधिगण द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल से हरी झंडी दिखाकर किया गया। इस कार्यक्रम में केन्द्र के सभी वैज्ञानिक एवं कृषि विभाग के अधिकारी एवं मैदानी अमले नवीनतम तकनीकी, विभिन्न विभाग की योजनाओं की जानकारी गांव-गांव जाकर कृषकों के साथ साझा करेंगे।

इस अवसर पर श्री उइके ने कृषकों से प्राकृतिक खेती को अपनाकर रसायनों का न्यूनतम प्रयोग करने का आग्रह किया कहा तथा कृषि आदानों पर बाजार की निर्भरता में कमी लाने की समझाइस कृषकों तक पहुंचाने की बात कहीं। मोहन नागर ने आधुनिक खेती के साथ-साथ परम्परागत खेती से जुड़े हुए विधाओं को अंगीकृत कर कृषि उत्पादन में मोटे अनाज को सम्मिलित करने तथा अधिक से अधिक बढ़ावा देने पर प्रकाश डाला। उप संचालक कृषि बैतूल आनंद बड़ोनिया ने कार्यक्रम की रूपरेखा तथा शासन की विभिन्न योजनाओं को इस कार्यक्रम के माध्यम से किसानों के मध्य ले जाने की बात कहीं। कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल के केन्द्र प्रमुख डॉ. व्ही.के. वर्मा के नेतृत्व में उक्त संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिकों के पांच दलों द्वारा जिले के समस्त 10 विकासखंड के गांवों में 225 सघन प्रशिक्षण आयोजित किए जावेंगे जिसमें आगामी खरीफ उसलों के बेहतर उत्पादन संबंधी तकनीकी सलाह कृषकों तक फसलों की बुवाई पूर्व पहुंचायी जावेगी ताकि लागत में कमी तथा संभावित होने वाली हानि से बचाव हो सके।

सहकारी विक्रेता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

ग्वालियर। विगत दिवस सहकारी विक्रेता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन में किया गया। कार्यक्रम में अप्रैश प्रेमी मंडल प्रबंधक मार्कफेड ग्वालियर सहित मार्कफेड के सभी अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी गोदाम प्रभारियों एवं उपस्थित समस्त स्टाफ को इफको की गतिविधियों के बारे में बताते हुए इफको के नए उत्पाद नैनो यूरिया, नैनो डीएपी के उपयोग के बारे में विस्तार से जानकारी दी। साथ ही संकट हरन बीमा योजना के बारे में सभी साथियों को विस्तार से जानकारी दी। मंडल प्रबंधक अप्रैश प्रेमी ने अपने सभी भंडारण केन्द्रों पर नैनो उर्वरकों का भंडारण करवाते हुए विक्रय को सुनिश्चित करने के लिए आश्वस्त किया।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक आयोजित

शाजापुर। कृषि विज्ञान केन्द्र, शाजापुर द्वारा 33वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक ऑफलाइन / ऑनलाईन गूगल मीट के द्वारा सम्पन्न हुई। जिसमें 18 वैज्ञानिक, अधिकारियों और किसानों ने अपनी उपस्थिति ऑनलाईन एवं 21 ने ऑफलाइन दर्ज कराई। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. भारत सिंह, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय इंदौर एवं अध्यक्षता डॉ. जी.आर.अम्बावतिया, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र शाजापुर द्वारा की गई।

कार्यक्रम में डॉ. अम्बावतिया द्वारा बैठक के उद्देश्य एवं महत्व पर प्रकाश डाला एवं खेती को लाभ का धंधा बनाने हेतु केन्द्र द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यों की जानकारी दी। डॉ. धाकड़ ने जिले में केन्द्र के द्वारा कृषकों के आर्थिक विकास हेतु किए जा रहे कार्यों, विगत रबी वर्ष 2024-25 मौसम में किए गए कार्यों एवं आगामी खरीफ वर्ष 2025-26 में किये जाने वाले कार्यों की कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार डॉ. गायत्री वर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ. अखिलेश सिंह द्वारा खरीफ मौसम में कृषकों के सुझाव के आधार पर कार्ययोजना में आवश्यक सुधार करने की सलाह दी साथ ही ट्रैक्टर एवं कृषि यंत्रों के चुनाव एवं रखरखाव हेतु प्रशिक्षण आयोजित करने को कहा। के.एस. यादव उप संचालक कृषि द्वारा फसल संग्रहालय में मोटे अनाज की किस्मों को अधिक क्षेत्र में लगाने की सलाह दी जिससे कृषक मोटे अनाज के प्रति जागरूक होकर अपने प्रक्षेत्र पर लगा सकें।

(पृष्ठ 8 का शेष)

जून माह में उद्यानिकी फसलों ...

एकांतरित दिनों पर ड्रिप से सिंचाई फलों के विकास और आंवला की उपज की बढ़ोतरी के लिए उपयोगी पाई गई है। इसके अतिरिक्त इससे खरपतवार भी कम उगते हैं।

मई-जून की गर्मियों में मृदा में नमी संरक्षण के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों जैसे धान के भूसे स्थानीय घास केले के पत्ते या गन्ने के कचरे को पलवार के रूप में 20 किग्रा प्रति वृक्ष की दर से थालों में बिछा सकते हैं। इस पलवार को 10-15 सेमी मोटाई तक एकरूप ढंग से वितरित किया जाना चाहिए। यदि पॉलीथीन का पलवार उपयोग करना हो तो 100 माइक्रॉन मोटी फिल्म का प्रयोग कर सकते हैं।

नींबूवर्गीय फल

नए बाग लगाने के लिए मई महीने में बाग का रेखांकन करके गड्ढे खोद कर उसे तैयार कर लेने चाहिए। पौधशाला के पौधों की नियमित सिंचाई, गुड़ाई और निराई करते रहना चाहिए। बाग में 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। मौसम में अधिक तापमान व बढ़ती गर्मी के कारण फलों की बढ़ोतरी रुक जाती है एवं फलों का गिरना एक प्रमुख समस्या बन जाता है। अत: 2-4 डी 10 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी का छिड़काव करना काफी लाभदायक रहता है।

जून के अंत में खोदे गए गड्ढों में गोबर की खाद उर्वरक और मिट्टी की बराबर मात्रा मिलाकर भर देनी चाहिए। मिट्टी भरने के पश्चात सिंचाई अवश्य करनी चाहिए ताकि मिट्टी बैठ जाए। जल निकास नालियों को साफ कर देना चाहिए। फलदार पौधों में नाइट्रोजन एवं पोटाश की दूसरी मात्रा को इसी माह में देना बेहद लाभदायक रहता है।

नीबू में एक वर्ष के पौधे में 25 ग्राम नाइट्रोजन व 25 ग्राम पोटाश जो क्रमश: बढ़कर 10 वर्ष या उससे अधिक आयु के पौधे के लिए 250 ग्राम नाइट्रोजन व 250 ग्राम पोटाश हो जाएगी। इसका प्रयोग इस माह या फल लगने के दो माह बाद करें। जस्ते की कमी दूर करने के लिए 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट या आवश्यकतानुसार अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव करें।

(पृष्ठ 8 का शेष)

जून माह में फसल उत्पादन ...

जून माह में करें ये कृषि कार्य

- सूरजमुखी/उड़द/मूंग जायद में बोई गई सूरजमुखी व उड़द की कटाई मड़ाई का कार्य 20 जून तक आवश्यक रूप से पूरा कर लेना चाहिए।
- इसी के साथ ही मूंग की फलियों की तुड़ाई का कार्य भी समय समाप्त कर लें।
- गर्मी की जुताई व मेड़बंदी का काम बारिश से पहले पूरा कर लेना चाहिए जिससे खेत बारिश का पानी सोख सके और खेत की मिट्टी बारिश में नहीं बह पाए।
- पिछले माह बोई गई बैंगन, टमाटर व मिर्च की फसलों में सिंचाई व आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई कार्य करें।

जून माह में किए जाने वाले बागवानी कार्य

यदि आप नया बाग लगा रहे हैं तो इसके रोपण के लिए प्रति गड्ढा 30-40 किग्रा सड़ी गोबर की खाद, एक किग्रा नीम की खली तथा गड्ढे से निकली मिट्टी को मिलाकर भरें। इस बात का ध्यान रखें कि गड्ढे को जमीन से 15-20 सेमी ऊंचाई तक भरा जाना चाहिए।

- केला की रोपाई के लिए यह उचित समय है। इसके रोपण के लिए तीन माह पुरानी, तलवारनुमा, स्वस्थ व रोगमुक्त पुत्ती का ही प्रयोग करें।
- आम में ग्राफ्टिंग का कार्य जून-जुलाई में करना काफी अच्छा रहता है, क्योंकि इस माह में बारिश का पानी हमेशा गुटी के उपर पड़ता रहता है। इससे अंकुरण सही रूप से होता है। इस मौसम में ऊपर से पानी देने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। लेकिन गुटी व ग्राफ्टिंग में छोटी-छोटी बातों का ख्याल रखना आवश्यक है। इनमें दो दिन पूर्व पौधे के पत्ते को हटा देना चाहिए और टहनियों की ठीक ढंग से चिराई करनी चाहिए ताकि उच्च गुणवत्ता वाली टहनी इसमें आसानी से समा सके। ध्यान रहे टहनियां तकरीबन वर्ष भर पुरानी होनी चाहिए। जिसमें अंकुरण निकल सके। अब इसके प्रवर्द्धन की बात करें तो जून व जुलाई माह में आम के पौधे को लगाया जाना उचित माना जाता है। आम की नई प्रजातियों में आम्रपाली व मल्लिका दो ऐसी किस्में है जिसमें प्रतिवर्ष फल लगते हैं।
- रजनीगंधा, देशी गुलाब एवं गेंदा के साथ उगे अनावश्यक पौधे जिन्हें खरपतवार कहते हैं उन्हें हटाने का कार्य करें ताकि सुगंधित पौधों का ठीक से विकास हो सके। इसके अलावा इन पौधों में आवश्यकतानुसार सिंचाई का कार्य भी करते रहें।
- रजनीगंधा की फसल से प्रति स्पाइक फूलों की संख्या व स्पाइक की लंबाई बढ़ाने के लिए जी.ए. जिब्रेलिक एसिड, 50 मिग्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर पत्तों पर इसका छिड़काव करें। बेला तथा लिली में निराई-गुड़ाई का कार्य करें और आवश्यकतानुसार इसकी सिंचाई का कार्य करें।
- मेंथा की दूसरी कटाई जून माह के अंत तक पूरी कर लेनी चाहिए। बता दें कि मेंथा को पुदीना भी कहा जाता है। इससे पिपरमेंट और तेल तैयार किया जाता है। इसका उपयोग दवाइयां, सौंदर्य उत्पाद, टूथपेस्ट, पान मसाला संग कंफेक्शनरी उत्पादों में होता है।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

नसरुल्लागंज में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री राहुल कुमार सागर
मे. न्यू राहुल एग्रो एजेंसी
ग्राम-भैंरुदा (नसरुल्लागंज)
जिला-सीहोर (म.प्र.)
मो. 9171959521

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

●औषधीय ●वन ●सब्जी ●फूल ●बीज ●स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ●कीटनाशक ●जैविक खाद ● गार्डन टूल ●जैविक उत्पाद ●ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।

वितरक - ●निर्मल सीड्स, जलगांव ●कलश सीड्स, जालाना ●अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ●दिनाकर सीड्स, गुजरात ●सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ●स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ●जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ●स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ●अनु प्रोडक्ट्स लि. ●श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन

शाजापुर। विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन ग्राम पतौली, शाजापुर में कृषि विज्ञान केन्द्र, शाजापुर एवं किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, शाजापुर के संयुक्त भागीदारी में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अरूण भीमावद, विधायक, शाजापुर एवं हेमराज सिंह सिसोदिया, जिला पंचायत अध्यक्ष, शाजापुर के मुख्य आतिथ्य एवं ऋजु बाफना, कलेक्टर, शाजापुर की अध्यक्षता मे संपन्न हुआ।

आयोजित कार्यक्रम में शाजापुर विधायक अरूण भीमावद ने बताया कि खेती को लाभ का धंधा बनाने हेतु जिले के सभी किसान भाइयों को प्रशिक्षित होना जरूरी है जिससे उन्नत कृषि तकनीक की जानकारी किसान भाईयों तक पहुंच सकें। साथ ही उन्होंने जैविक एवं प्राकृतिक खेती की उन्नत तकनीक अपनाने की सलाह दी जिससे खेती की लागत कम हो सके। सभी किसान भाईयों को सलाह दी गई की वे कृषि विज्ञान केन्द्र के समस्त वैज्ञानिकों एवं कृषि एवं उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों के निरंतर सम्पर्क में रहकर उन्नत कृषि तकनीक की जानकारी प्राप्त करते रहें।

ऋजु बाफना, कलेक्टर शाजापुर द्वारा वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों को अभियान को सफल बनाने हेतु निर्देशित किया गया साथ किसानों से अधिक भागीदारी की अपील की गई ताकि कार्यक्रम का अधिकतम लाभ जिले के किसानों को प्राप्त हो सके। कार्यक्रम में केन्द्र प्रमुख डॉ. जी.आर अंबावतिया के द्वारा खेती को लाभ का धंधा बनाने हेतु केन्द्र द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। इस दौरान उपस्थित सभी किसानों को सलाह दी कि उद्यानिकी एवं औषधीय फसलों की उन्नत कृषि तकनीक किसान भाईयों तक पहुंचाये जिससे किसान भाईयों की आय में वृद्धि हो सकें। कार्यक्रम में अतिथियों के द्वारा कृषि रथो को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

विकसित कृषि संकल्प अभियान कृषकों की दशा एवं दिशा बदलने की पहल : डॉ. त्रिपाठी

रतलाम। कृषि विज्ञान केंद्र एवं कृषि विभाग रतलाम के सहयोग से कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार व भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में देश के समस्त 700 जिलों में 29 मई 2025 से 12 जून 2025 तक विकसित कृषि संकल्प अभियान चलाया जा रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. सर्वेश त्रिपाठी ने कहा कि इस अभियान से करोड़ों किसान लाभान्वित होंगे एवं देश की दशा व दिशा बदलने में एक अद्वितीय पहल होगी। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिकों को कृषकों के द्वार जाकर खरीफ सीजन में आने वाली समस्याओं से स्वयं अवगत होकर उन समस्याओं का समाधान करना, कृषकों को कृषि से संबंधित नवाचार तकनीक का कृषि में समावेश हेतु प्रेरित करना एवं केंद्र सरकार की कृषक लाभान्वित योजनाएं जैसे के.सी.सी., प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री कृषि बीमा योजना, ड्रोन तकनीक एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड आदि के बारें में विस्तार पूर्वक चर्चा कर जानकारी प्रदान करना। किसानों के अनुरूप अनुसंधान हो इस पर चर्चा कर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं कृषि मंत्रालय को रिपोर्ट करना। विकासखड सैलाना में डॉ. चतरा राम कांटवा ने तीन ग्राम पंचायत, डॉ. रामधन घसवा ने रतलाम ग्रामीण की तीन ग्राम पंचायत एवं डॉ. ज्ञानेंद्र प्रताप तिवारी ने आलोट विकासखण्ड की तीन ग्राम पंचायत में अभियान चलाकर कृषकों को विस्तार पूर्वक जानकारी दी।

नरसिंहपुर वोहानी में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

तारेश लोधी

मे. अपना ट्रेडर्स
मेन रोड वोहानी (सिहोरा)
जिला-नरसिंहपुर (म.प्र.)
मो. 9644657299

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

कृषक दूत मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755-4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम...

संस्था का नाम...

पूरा पता...

ग्राम..............................पोस्ट..............................तहसील ....

जिला..............................राज्य..............................पिन कोड

दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में).............................. (शब्दों में)..............................

बैंक का नाम.............................. ड्राफ्ट चेक क्रमांक..............................

दिनांक.............................. संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान.............................. प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक.............................. एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

इफको नैनो उर्वरकों की बिक्री में 47 प्रतिशत की वृद्धि

नई दिल्ली। विश्व की नंबर 1 सहकारी संस्था, इफको ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए कर-पूर्व लाभ के रूप में 3,811 करोड़ रुपये का मुनाफा दर्ज किया, साथ ही नैनो उर्वरकों की बिक्री में 47 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। इस वित्त वर्ष (2024-2025) में नैनो-उर्वरकों की 365.09 लाख बोतलें बेची गईं, जबकि पिछले वित्त वर्ष (2023-2024) में 248.95 लाख बोतलें बेची गई थीं। वित्त वर्ष 24-25 के दौरान इफको ने 41,244 करोड़ रुपये का कारोबार दर्ज किया।

इफको के अध्यक्ष श्री दिलीप संघानी ने मीडिया से बातचीत के दौरान कहा कि यह देश के पूरे सहकारी क्षेत्र के लिए गर्व की बात है कि इफको के शानदार विकास के आंकड़े सहकार से समृद्धि के सपने को साकार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि समिति ने लगातार तीन वित्तीय वर्षों में 3000 करोड़ रुपये से अधिक का लाभ दर्ज किया है। पिछले 23 लगातार वर्षों से इफको ने अपने सदस्यों को चुकता शेयर पूंजी पर 20 प्रतिशत लाभांश देकर पुरस्कृत किया है जो न्यायसंगत और सतत विकास के प्रति इसके समर्पण और प्रतिबद्धता को दर्शाता है। केंद्रीय रसायन और उर्वरक मंत्रालय के समर्थन से नैनो-उर्वरक समिति के लिए प्रमुख फोकस क्षेत्र रहा है, व्यापक जागरूकता अभियान और अनुसंधान ने किसानों के बीच उत्पादों की स्वीकृति बढ़ाने में समिति की मदद की है।

इफको के प्रबंध निदेशक डॉ. यू.एस. अवस्थी ने कहा कि इफको मिट्टी में मूल खुराक के रूप में प्रयोग के लिए दानेदार रूप में नैनो एनपीके उर्वरक भी लॉन्च करेगा। नैनो एनपीके उर्वरक मैग्नीशियम, सल्फर, जिंक और कॉपर से समृद्ध है जो फसल उत्पादकता बढ़ाने में मदद करेगा और पोषक तत्वों के नुकसान को कम करेगा। लिक्विड नैनो यूरिया प्लस और लिक्विड नैनो डीएपी के साथ यह मिट्टी से पारंपरिक रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को खत्म कर सकता है। यह प्राथमिक पोषक तत्वों की उच्च उपयोग दक्षता के साथ संतुलित पोषण को और बढ़ावा देगा। उन्होंने आगे कहा कि इफको सूक्ष्म पोषक तत्वों की जरूरत को पूरा करने के लिए 100 मिलीलीटर की बोतल के आकार में तरल रूप में नैनो जिंक, नैनो कॉपर भी लॉन्च करेगा।

नैनो प्रौद्योगिकी, ड्रोन प्रौद्योगिकी, एआई प्रौद्योगिकियों को शामिल करके, इफको देश भर में कृषि और खाद्य मूल्य श्रृंखला को बदल रहा है इफको ने 40 से अधिक देशों में अपनी उपस्थिति का विस्तार किया है, जिसमें अमेरिका, ब्राजील, स्लोवेनिया, मॉरीशस, जाम्बिया, नेपाल और बांग्लादेश में उत्कृष्ट प्रदर्शन और कम उर्वरक उपयोग दर्ज किया गया है। इसके अलावा, प्रबंध निदेशक ने स्वदेशी आविष्कारों के साथ देशी बीजों को संरक्षित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया, इसी तर्ज पर इफको ने कलोल इकाई में एक अत्याधुनिक बीज नवाचार केंद्र बनाने की पहल भी की है। इफको ने 2023-24 के लिए इफको सहकारिता रत्न पुरस्कार से मानसिंह भाई कल्याणजी भाई पटेल को सम्मानित किया गया है। वहीं अमरीक सिंह को वर्ष 2023-24 के लिए इफको सहकारिता बंधु पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

विकसित कृषि संकल्प अभियान यात्रा को हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

दतिया। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार की पहल पर विकसित कृषि संकल्प अभियान 2025 (29 मई से 12 जून 2025 तक) यात्रा का दतिया जिले के जिला पंचायत अध्यक्ष धीरू दांगी द्वारा हरी झण्डी दिखाकर कृषि विज्ञान केन्द्र दतिया से रवाना किया गया।

यह यात्रा दतिया जिले के तीन विकासखण्डों दतिया, भाण्डेर एवं सेंवढ़ा में जाकर प्रतिदिन तीन ग्रामों में किसानों के साथ संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं को एवं सरकारी योजनाओं को जनजन तक पहुंचाने का कार्य करेगी। अभियान में दतिया की टीम द्वारा हमीरपुर, झिरकाबाग एवं डगरई ग्रामों में, भाण्डेर की टीम द्वारा सरसई, प्यावल एवं धमना में तथा सेंवढ़ा की टीम द्वारा गोहना, धीरपुरा एवं सुंदरपुरा में भ्रमण किया जायेगा एवं किसानों से संवाद स्थापित कर किसानों की समसामयिक समस्याओं का निराकरण किया जायेगा। साथ ही केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा कृषक हितैषी योजनाओं को किसानों को समझाया जायेगा एवं अधिक से अधिक किसानों को इनका लाभ लेने के लिये प्रेरित किया जायेगा। कार्यक्रम में केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. एस.के. सिंह, डॉ. ए.के. सिंह, डॉ. रूपेश जैन सहित कृषि विभाग से उप संचालक कृषि राजीव वशिष्ठ, परियोजना संचालक आत्मा जी.एस. गोरख, उप संचालक पशुपालन डॉ. जी दास, निदेशक भारतीय मृदा संस्थान डॉ. आर.के. पटेल, उपसंचालक मत्स्य श्री पाठक सहित अन्य विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल रहे।

किसानों को मिली कृषि विभाग की योजनाओं की जानकारी

छतरपुर। विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतर्गत विकासखंड बक्सवाहा के ग्राम धीमरवा, बजना, कंजर, चोपरा , छायन तथा मझौरा के किसान भाइयों को कृषि विभाग एवं आत्मा परियोजना की जानकारी से अवगत कराया गया। जानकारी के अंतर्गत योजनाओं पर दिए जा रहे अनुदान की जानकारी, बीज की जरूरत, राज्य के बाहर एवं अंदर कृषक भ्रमण तथा प्रशिक्षण की जानकारी तथा बेरोजगार युवाओं को भारत सरकार के देसी डिप्लोमा से रोजगार मिलने की जानकारी से अवगत कराया गया।

डॉ. बी.पी. सूत्रकार परियोजना संचालक आत्मा, एच.डी. विश्वकर्मा प्रभारी वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी बक्सवाहा, सत्यम उपाध्याय कृषि विस्तार अधिकारी की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में किसान भाइयों ने भाग लिया।

उन्नत कृषि तकनीक संगोष्ठी का आयोजन

जबलपुर। कृषि एवं सहकारिता विभाग के सहयोग से विश्व की सबसे बड़ी सहकारी संस्था इफको द्वारा उन्नत कृषि तकनीक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मार्केटिंग डायरेक्टर, इफको एवं अध्यक्ष भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड नई दिल्ली डॉ. योगेंद्र कुमार ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए बताया कि वर्ष 2021 में भारत शासन द्वारा अलग से सहकारिता मंत्रालय बनाया गया और देश के पहले सहकारिता मंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आशा अनुरूप भारत में तीन नई सहकारी संस्थाओं- बीज, निर्यात एवं जैविक क्षेत्र में गठन करवाया। उन्होंने कहा की किसान हमारे अन्नदाता हैं और इफको किसानों की संस्था है और हमेशा किसानों को नई-नई उन्नत उपकरण, बीज एवं खाद उपलब्ध कराने के लिए दृढ़ संकल्पित है। उन्होंने मृदा में घटते जीवाश्म अंश पर चिंता जताई एवं किसानों को नैनो यूरिया प्लस, नैनो डीएपी, नैनो जिंक, नैनो कॉपर, सागरिका एवं जैव उर्वरकों का अधिक से अधिक उपयोग करने की सलाह दी। जिससे मिट्टी और पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के साथ ही खेती में लागत को कम किया जा सके, साथ ही गुणवत्तापूर्ण कृषि उत्पाद प्राप्त हो सके।

प्रबंध संचालक मार्कफेड भोपाल आलोक कुमार सिंह ने बताया की उत्पादन एवं विपणन में सहकारिता के द्वारा अपने कृषि उत्पादन का लेनदेन किया जाना चाहिए। पंजीयक सहकारी संस्थाएं मध्य प्रदेश मनोज पुष्प ने सहकारी समितियों को आ रही समस्याओं के तुरंत निराकरण हेतु अपनी प्रतिबद्धता की बात करते हुए हर संभव सहयोग करने की बात कही। उन्होंने मृदा परीक्षण हेतु सहकारी समितियों को कृषि विभाग के साथ मिलकर किसानों के लिए कार्य करने हेतु निर्देशित किया।

राज्य विपणन प्रबंधक इफको डॉ. डी.के. सोलंकी ने किसानों को संतुलित उर्वरक उपयोग करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में एडीएम अनिल डामोर, एसडीएम विदिशा शितिज शर्मा, मंडल प्रबंधक मार्कफेड भोपाल अजय सिंह, उप संचालक कृषि के.एस. खपेड़िया, जिला सहकारी केंद्रीय बैंक विदिशा के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विनय प्रकाश सिंह, उपायुक्त सहकारिता प्रेम सिंह बरोटिया, जिला विपणन अधिकारी कल्याण सिंह ठाकुर, जिला खाद्य अधिकारी तंतुबाई, जिला जनसंपर्क अधिकारी बी.डी. अहीरवार, सहायक कृषि अधिकारी महेंद्र कुमार ठाकुर, जनप्रतिनिधि अंशुज शर्मा सेऊ, सहित जिले के कृषि विभाग के अधिकारी, सहकारिता विभाग के अधिकारी, सभी समिति प्रबंधक एवं प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। कार्यकम में प्रगतिशील कृषक ब्रजकिशोर राठी, अशोक अग्रवाल, थान सिंह यादव, मनु शर्मा एवं आशुतोष शर्मा ने भी अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय अधिकारी इफको कुमार मनेन्द्र के द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन उप संचालक कृषि के एस खपेड़िया के द्वारा दिया गया। कार्यक्रम में 400 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार

महावीरा जिरोन पावर प्लस से करें सोयाबीन में पोषक तत्व प्रबंधन

श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय
हेड एग्रोनामिस्ट
आरएमपीसीएल, इंदौर (म.प्र)

खरीफ सीजन में मध्यप्रदेश की प्रमुख फसल सोयाबीन है। वर्तमान में किसानों द्वारा 55 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन मध्यप्रदेश में बोया जाता है। सोयाबीन की खेती पिछले 4 दशक से प्रदेश में की जा रही है। किसानों द्वारा सोयाबीन में संतुलित एवं पोषक तत्व आधारित उर्वरकों का प्रयोग नहीं करने से सोयाबीन का उत्पादन प्रभावित हुआ है। असंतुलित उर्वरक उपयोग से सोयाबीन में कई तरह के कीट एवं रोग लगने से किसानों को लगातार नुकसान होने लगा है। सोयाबीन उत्पादक किसानों की समस्या को देखते हुए उर्वरक उद्योग की अग्रणी कंपनी आरएम फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड ने छः पौषक तत्व आधारित उर्वरक महावीरा जिरोन पावर प्लस उपलब्ध करवाया है जो सोयाबीन की फसल के लिये एक महत्वपूर्ण उर्वरक है।

सोयाबीन जैसी तिलहनी फसल के लिये सल्फर अत्यधिक महत्वपूर्ण है इसलिये छः पौषक तत्वों वाला महावीरा जिरोन पावर प्लस सोयाबीन के लिये सबसे उपयुक्त खाद है। इसका उपयोग आधार खाद के रूप में बोनी के समय करना चाहिये। तीन बोरी महावीरा जिरोन पावर प्लस प्रति एकड़ प्रयोग करने से छः पौषक तत्वों की पूर्ति आसानी से की जा सकती है। सोयाबीन में अफलन की बड़ी समस्या बनती जा रही है। इसके प्रबंधन के लिये यदि किसान भाई शुरू से ही जिंक, बोरोन एवं सल्फर युक्त महावीरा जिरोन पावर प्लस का प्रयोग आधार खाद के रूप में करें तो इस समस्या से बचा सकता है। महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध फास्फोरस की मात्रा 16 प्रतिशत, कैल्शियम 19 प्रतिशत एवं सल्फर 11 प्रतिशत है। इसके अलावा 0.5 प्रतिशत जिंक एवं मैग्नीशियम है। इसमें 0.20 प्रतिशत बोरॉन है। सोयाबीन की फसल में नवीन अंगों के निर्माण, पोटैशियम एवं कैल्शियम अनुपात को नियंत्रित करने में **जिंक** की प्रमुख भूमिका होती है। महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध **बोरोन** सोयाबीन के फूलों एवं फलों को गिरने से बचाता है।

सल्फर सोयाबीन में तेल की मात्रा बढ़ाता है। **कैल्शियम** जड़ों के विकास एवं पौधे के अंगों की रचना के लिये जरूरी एवं कोशिकाओं का अभिन्न तत्व होने से सोयाबीन के पौधे में मजबूती प्रदान करता है। इसमें उपलब्ध **फास्फोरस** सोयाबीन की जड़ों की वृद्धि के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है। महावीरा जिरोन पावर प्लस युक्त खाद मुख्य और पोषक तत्वों का उपयुक्त स्त्रोत है। विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा अनुशंसित महावीरा जिरोन पावर प्लस सोयाबीन के लिये सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। सोयाबीन में महावीरा जिरोन पावर प्लस का प्रयोग करके आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति आसानी से की जा सकती है। आर.एम. फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स का महावीरा जिरोन पावर प्लस मध्यप्रदेश स्थित कंपनी के अधिकृत विक्रेताओं के पास उपलब्ध है।

नया तरीका, नई उमंग
मेरी फसल बढ़ेगी Ziron के संग

महावीरा जिरोन पावर प्लस उपयोग के फायदे

- फसल के हर पड़ाव पर मैग्नीशियम, जिंक, बोरोन से फसल में दिखेगा असली फर्क
- तीन बोरी प्रति एकड़ करें बुवाई के समय प्रयोग
- छः पौषक तत्व कैल्शियम, सल्फर, फास्फोरस, जिंक, बोरोन एवं मैग्नीशियम से भरपूर सिक्स इन वन खाद
- 8 से 10 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन संभव

महावीरा जिरोन पॉवर प्लस में उपलब्ध पौषक तत्व

घटक	मात्रा (न्यूनतम प्रति.)
फास्फोरस	16 प्रतिशत
जिंक	0.5 प्रतिशत
बोरोन	0.20 प्रतिशत
सल्फर	11 प्रतिशत
कैल्शियम	19 प्रतिशत
मैग्निशियम	0.5 प्रतिशत

सोयाबीन में पोषक तत्वों के प्रबंधन से होने वाले फायदे

उच्च उत्पादन (High Yield): सही समय पर और सही मात्रा में पोषक तत्व देने से पौधों की वृद्धि बेहतर होती है और दाना भरने की क्षमता बढ़ती है, जिससे उपज में वृद्धि होती है।

बेहतर गुणवत्ता (Improved Quality): संतुलित पोषण से दानों का आकार, प्रोटीन की मात्रा और तेल की गुणवत्ता बेहतर होती है।

मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है (Maintains Soil Fertility): संतुलित पोषक तत्वों का उपयोग मिट्टी की दीर्घकालिक उर्वरता बनाए रखने में मदद करता है।

पौधों में रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है (Enhanced Disease Resistance): कुछ पोषक तत्व जैसे जिंक, बोरॉन और पोटैशियम पौधे की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाते हैं।

फूल और फली झड़ने की समस्या कम होती है (Reduced Flower/Pod Drop): बोरॉन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व फूलों और फलों की स्थिरता में मदद करते हैं।

गांठों (nodules) का बेहतर विकास (Better Nodule Formation): मोलिब्डेनम जैसे पोषक तत्व से राइजोबियम बैक्टीरिया द्वारा नाइट्रोजन स्थिरीकरण में सुधार होता है।

सूखा सहनशीलता में वृद्धि (Improved Drought Tolerance): संतुलित पोषण पौधों को सूखे की स्थिति में भी जीवित रहने और उत्पादन करने में सक्षम बनाता है।

उर्वरकों की दक्षता बढ़ती है (Better Fertilizer Use Efficiency): जब सभी पोषक तत्व संतुलन में हों, तो प्रत्येक उर्वरक अधिक प्रभावी होता है।

खर्च में बचत (Cost Saving in Long Term): मृदा परीक्षण और सही पोषक तत्वों के उपयोग से अनावश्यक खर्च कम होता है।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण (Sustainable Farming): संतुलित पोषक प्रबंधन से जल, मिट्टी और पर्यावरण पर सकारात्मक असर पड़ता है।

सोयाबीन की फसल में पौषक तत्वों का प्रबंधन (अनुशंसित उर्वरक की मात्रा- KG 08:24:16:08) प्रति एकड़

अवधी	Mahaveera Ziro	MOP	UREA	SYMTRON	AMITRON-Z	BORON 20%	MGSo4
	KG	KG	KG	KG	ML	GM	KG
बुवाई के समय	150	26	10	4	0	0	10
25-30 दिन बाद में	0	0	12	0	0	0	0
45-50 दिन बाद में	0	0	0	0	500	250	0
75-80 दिन बाद में	0	0	0	0	0	0	0
कुल मात्रा	150	26	22	4	500	250	10
जल घुलनशील उर्वरक 4-5 ग्राम/लीटर पानी में	30-35 दिन की अवधि में 12:61:00 का 50-55 दिन की अवधि में 00:52:34 एवं 70-75 दिन में 00:00:50 का एक छिड़काव अवश्य करें						

अधिक जानकारी के लिये **कंपनी के कस्टमर केयर नंबर +918956926412** पर भी संपर्क किया जा सकता है।